

हरिभूमि भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार, 7 सितंबर 2025

11 नव्वे मुज्जे बच्चों ने प्रस्तुतियां देकर मनाया ...



12 अपनी बदहाली की दास्तां बयां कर रहा शहर का नेहरू ...



MK हॉस्पिटल भिवानी

जहाँ हर जटिल बीमारी का मुमकिन है इलाज!

डॉ. विष्णु कांत शर्मा (Urologist & Uro-Onco Surgeon)

जिन्होंने अपने कुशल अनुभव और अत्याधुनिक तकनीक की मदद से जटिल **Bladder Cancer Surgery** सफलतापूर्वक पूरी की।

MK Hospital – जहाँ जीवन को मिले नई उम्मीद

डॉ. विष्णु कांत शर्मा

Consultant - Urology
MBBS, MS, (General Surgery), MCh (Urology)

MK Hospital में हम हर मरीज को देते हैं :- सटीक निदान • अनुभवी विशेषज्ञों की टीम • आधुनिक सुविधाएं • भावनात्मक सहयोग और संपूर्ण देखभाल



• आयुष्मान व हरियाणा सरकार पैनाल पर इलाज उपलब्ध*

पेशाब में आता था खून जांच करने पर निकली गांठ!

- ऑपरेशन के बाद मरीज की स्थिति स्थिर रही।
- धीरे-धीरे रिकवरी हुई और आज मरीज स्वस्थ जीवन जी रहा है।
- इलाज के बाद मरीज की नियमित जांच और देखरेख जारी है ताकि कोई पुनरावृत्ति न हो।
- अब बीमारियों से डरने की नहीं, लड़ने की जरूरत है।
- समय पर जांच और इलाज से गंभीर बीमारियों को हराया जा सकता है।

+91 70 09 09 09 24

5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana

बास मल्टीपरपज ड्रेन फिर टूटी, 60 एकड़ फसल जलमग्न पिचौपा खुर्द की नहर टूटी, फसलें जलमग्न

■ सूचना मिलते ही जेई मौके पर पहुंचे और टूटे हुए हिस्से को बंधवाना शुरू करवाया
हरिभूमि न्यूज़ ►► बवानीखेड़ा



बवानीखेड़ा। बास ड्रेन पर टूटने पर मौके पर उपस्थित किसान। फोटो: हरिभूमि

शनिवार को बास मल्टीपरपज ड्रेन एक बार फिर टूट गई, जिससे आसपास के किसानों की बड़ी समस्या खड़ी हो गई। ड्रेन टूटने की सूचना किसानों ने तुरंत प्रशासन तक पहुंचाई। सूचना मिलते ही प्रदीप जे.ई. मौके पर पहुंचे और उन्होंने टूटे हुए हिस्से को बंधवाने का कार्य शुरू करवाया। प्रदीप ने बताया कि इस ड्रेन की क्षमता 323 क्यूसेक पानी

की है, जबकि हाल ही में आई प्राकृतिक आपदा के चलते इसमें पीछे से लगभग 475 क्यूसेक पानी आ रहा है। यही कारण है कि ड्रेन बार-बार टूट रही है और आसपास की जमीन जलमग्न हो रही है। ड्रेन टूटने से लगभग 60 एकड़ जमीन में

पानी भर गया है। तीन से चार फीट तक पानी खड़ा हो जाने से किसानों की मौजूदा सीजन की फसल पूरी तरह खराब हो चुकी है। किसानों का कहना है कि इस नुकसान का असर अगले सीजन की फसल पर भी पड़ेगा, क्योंकि जमीन देर तक पानी

में डूबी रहेगी और समय पर बुआई संभव नहीं होगी। मौके पर मौजूद किसानों साधु राम, सुरेश, ओमप्रकाश, धर्मानंद, कर्मवीर, विनोद, जयवीर, रामदास, रवि, रमेश और बलराज ने प्रशासन से विशेष गिरदावरी करवाने की मांग की। किसानों का कहना है कि उन्हें हुए नुकसान की भरपाई के लिए उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए, ताकि वे आगे की खेती कर सकें। स्थानीय लोगों ने भी प्रशासन से अपील की है कि ड्रेन की स्थायी मरम्मत करवाई जाए, जिससे बार-बार टूटने की समस्या समाप्त हो सके। यदि समय रहते समाधान नहीं किया गया, तो आने वाले दिनों में किसानों को और भी भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है।

पिचौपा खुर्द की नहर टूटी, फसलें जलमग्न

■ सिंचाई विभाग के अफसरों ने मरम्मत कार्य शुरू करवाया

हरिभूमि न्यूज़ ►► बाढ़ड़ा



भिवानी। पिचौपा खुर्द में टूटी नहर।

फोटो: हरिभूमि

देर रात गांव पिचौपा खुर्द की माइनर टूटने से साथ लगते वनक्षेत्र व कृषि भूमि पूरी तरह से जलमग्न हो गई। किसानों ने इसकी सूचना मिलते ही विभाग को दी और विभाग ने पीछे से पानी को आपूर्ति बंद करवाई। सुबह सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने मौका मुआयना कर मरम्मत का कार्य शुरू करवाया। गांव पिचौपा खुर्द के नजदीक

ग्रामीणों की मांग पर विभाग ने जोहड़ तक आपूर्ति के लिए विशेष नाला निर्मित करवाया, जो देर रात्रि

बरसात के कारण किनारों से कटाव पैदा कर टूट गया, जिससे सारा पानी साथ लगते वनक्षेत्र व कृषि क्षेत्र में

बंधारित हो गया। ग्रामीणों ने विभाग को जानकारी देने पर आनन फानन में पीछे से नहर बंद करवाई। शनिवार को सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने मौका मुआयना कर मरम्मत कार्य शुरू करवाया। विभाग के कनिष्ठ अभियंता सुखवीर ने बताया कि नहर टूटने की जानकारी मिलते ही विभाग के आला अधिकारियों से संपर्क कर पीछे से पानी बंद करवा दिया गया और रिपेयरिंग शुरू करवा दी है, जो शाम तक पूरा कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि माइनर टूटने से माल जान का कोई नुकसान नहीं हुआ।

भिवानीवासियों को

मेडिकल कॉलेज की सौगात

इसी सत्र में दाखिले शुरू होने पर विद्यार्थियों को मिलेगा फायदा

एवं

जीएसटी के दो स्लैब बनाए जाने पर

पीएम मोदी

व

सीएम नायब सैनी

का

बहुत आभार

हरिभूमि के

30वें स्थापना दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

घनश्याम सराफ

पूर्व मंत्री एवं विधायक भिवानी

लगातार दमक रहे सोना-चांदी, आठ माह में दिया 36% व 42% तक रिटर्न

- ▶ रिटर्न देने में सभी एसेट्स को पीछे छोड़ा, निवेशक मालामाल
- ▶ सही रणनीति बनाकर निवेश किया जाए तो मिलेगा फायदा
- ▶ हाल में आई तेजी के बीच सोने में निवेश की सही प्लानिंग करें
- ▶ गोल्ड व सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने 40% से ज्यादा रिटर्न दिया

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

दुनिया में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ की दहशत के बीच सोना-चांदी निवेश के सबसे भरोसेमंद विकल्प बनकर उभर रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सोने ने इस साल अब तक 8 माह में करीब 36% तक और चांदी ने करीब 42% तक रिटर्न दिया है। यानी इन 8 महीनों में चांदी सोने से काफी आगे निकल गई है। अगर रुपये में बात करें तो चांदी 37,281 रुपये प्रति किलोग्राम महंगा हुई है। वहीं, सोना 27,976 रुपये प्रति 10 ग्राम महंगा हुआ है। जानकारों का कहना है कि इस साल के आखिरी तक रिटर्न के मामले में चांदी सोने को बहुत पीछे छोड़ सकती है। सोने लगातार बढ़ती कीमतों के बीच लोगों को अब इसमें प्लानिंग तहत निवेश करना होगा। वरना यह झटका भी दे सकता है। हालांकि कहा जाता है कि सोना पुराने समय से ही भरोसे का निवेश रहा है। सोने-चांदी की कीमतों में जबरदस्त तेजी देखी जा रही है। बीते एक साल में गोल्ड और सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने भी 40% से ज्यादा एक्जट रिटर्न दिया



है। निवेशकों के लिए बड़ा सवाल यह है कि क्या इस तेजी के बाद अब भी सोने-चांदी में निवेश करना सही रहेगा? और अगर हां, तो किस तरीके से।

सोने-चांदी की कीमतों रिकॉर्ड ऊंचाई पर

सोने-चांदी की कीमतें नई ऊंचाईयों पर चढ़ी हैं। इनका असर ईटीएफ पर भी पड़ा है। पिछले 12 महीनों में गोल्ड ईटीएफ ने औसतन 40.44% का रिटर्न दिया है। इस दौरान 16 गोल्ड ईटीएफ मार्केट में एक्टिव रहे, जिनमें टाटा गोल्ड ईटीएफ ने सबसे ज्यादा 40.76%, आईसीआईसीआई प्रूडिशियल गोल्ड ईटीएफ ने 40.74% और आदित्य बिरला सनलाइफ गोल्ड ईटीएफ ने भी 40.67% का मजबूत रिटर्न दिया।

वर्षों बढ़ रही है सोने-चांदी की चमक

जानकारों के मुताबिक सोने और चांदी की कीमतों में यह उछाल जियो-पॉलिटिकल टेंशन, टैरिफ को लेकर जारी उथल-पुथल और इंस्ट्रुमेंटल डिमांड की वजह से आया है। खासतौर पर सिल्वर की डिमांड सेमीकंडक्टर, सोलर पैनल, इलेक्ट्रिकल टूल्स (इवी) और वॉन टेक्नोलॉजी में ज्यादा हो रही है। यही वजह है कि चांदी 10 साल के ऊंचे स्तर पर पहुंची है। सोना पारंपरिक रूप से एक डिफ्लेक्शन एसेट माना जाता है, जो बाजार में अनिश्चितता और डर के समय निवेशकों को सुरक्षा देता है। यही कारण है कि हर अस्थिर दौर में सोने की कीमतें ऊपर जाती हैं।

पोर्टफोलियो में कितना हो गोल्ड-सिल्वर का हिस्सा

आपके पोर्टफोलियो में सोने-चांदी की हिस्सेदारी 10-20% से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। बाकी निवेश इक्विटी और डेट में होना चाहिए। आमतौर पर 80:20 का इक्विटी-डेट रेशियो संतुलित माना जाता है, और सोना-सिल्वर इसमें हेजिंग यानी रिस्क से बचाने का काम करते हैं। इसका मतलब है कि गोल्ड और सिल्वर आपके लगातार ऊंचा रिटर्न नहीं देंगे, लेकिन आपके पोर्टफोलियो को अस्थिरता से बचाने और डाइवर्सिफिकेशन देने का काम करेंगे।

ईटीएफ और एसआईपी के जरिये निवेश बेहतर

सोने-चांदी की मौजूदा ऊंची कीमतों पर एकमुश्त निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। बेहतर है कि निवेशक एसआईपी (एसआईपी) के जरिये धीरे-धीरे इनमें पैसा लगाएं। इससे कीमतों के उतार-चढ़ाव की एक्जिजिंग हो जाती है और लंबी अवधि में बेहतर नतीजे मिलते हैं। ईटीएफ सोने-चांदी में निवेश का सबसे आसान और ज्यादा पारदर्शी तरीका है। गोल्ड ईटीएफ में हर यूनिट आम तौर पर 1 ग्राम सोने की वैल्यू को बताती है। इन्हें आप डिमेंट अकाउंट के जरिये शेयरों की तरह खरीद-बेच सकते हैं। सिल्वर ईटीएफ भी इसी तरह काम करते हैं।

निवेशकों के लिए क्या है सही रणनीति

अगर आप सोने-चांदी में निवेश करना चाहते हैं तो इसे स्पेक्युलेटिव यानी सट्टे नजरिए से नहीं बल्कि एसेट एलोकेशन के नजरिए से देखें। यह लंबे समय में आपके पोर्टफोलियो में स्टैबल और सुरक्षित बनाने है।
▶ पोर्टफोलियो में गोल्ड और सिल्वर की हिस्सेदारी 10-20% तक रखें
▶ एकमुश्त निवेश की बजाय एसआईपी से धीरे-धीरे खरीदें
▶ ईटीएफ को प्रायोरिटी दें क्योंकि वे पारदर्शी, आसान और लिक्विड होते हैं



▶ अगर प्रोफेशनल मैनेजमेंट चाहिए तो मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड भी विकल्प हो सकते हैं

सावधानी से बढ़ाएं कदम

सोने-चांदी में तेजी के बावजूद निवेशकों को सावधानी से कदम बढ़ाना चाहिए। यह सही है कि हाल में ईटीएफ ने 40% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन भविष्य में इनका रोल मुख्य रूप से पोर्टफोलियो को स्टैबल रखने और जोखिम कम करने का रहेगा। सही रणनीति यही है कि इन्हें लंबी अवधि के लिए एसेट एलोकेशन का हिस्सा बनाएं, न कि शॉर्ट-टर्म मुनाफे के लिए। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि 2025 की पहली छमाही में सोने में जो तेजी देखी गई है, वह लंबी खिंच सकती है और अब नई खरीदारी से बचना चाहिए, क्योंकि कीमतें पहले से ही काफी ऊंचाई पर पहुंच गई हैं।

क्या होती है नो-कॉस्ट ईएमआई क्या सच में नहीं लगता ब्याज?

जानकारी

बिजनेस डेस्क

त्यो हारी सीजन आते ही ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्मों और बैंक 'नो-कॉस्ट ईएमआई' का खूब प्रचार करते हैं। मोबाइल, लैपटॉप, टीवी से लेकर फ्रिज और वॉशिंग मशीन तक, हर जगह यह ऑफर देखने को मिल जाता है। सुनने में तो यह बहुत लुभावना लगता है कि महंगी चीज बिना ब्याज के आसान किस्तों में मिल जाएगी। इसे देखकर अक्सर ग्राहक भी ललचा जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा सामान खरीदने का प्रयास करते हैं। ऐसे त्योहारी सीजन में खासकर होता है। लेकिन क्या नो-कॉस्ट ईएमआई सच में 'फ्री' है? इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे ही कुछ तथ्य जिनसे पता चलेगा की नो-कॉस्ट ईएमआई कभी भी फ्री नहीं होता। इसके कुछ नुकुछ हैंडक चार्ज जरूर होते हैं, जिन्हें बहक बड़ी अंशानी से एडजस्ट करते हैं और कस्टमर को पता तक नहीं चलने देते। आइए एक्सपर्ट समझते हैं नो-कॉस्ट का पूरा खेल। जानकारों का कहना है कि नो-कॉस्ट ईएमआई का मतलब यह होता है कि जब आप कोई प्रोडक्ट किस्तों में खरीदते हैं, तो आपको अतिरिक्त ब्याज नहीं देना पड़ता। लेकिन हकीकत में 'नो कॉस्ट' ईएमआई पूरी तरह से फ्री नहीं होती, बल्कि इसमें ब्याज या चार्ज को अलग तरीके से एडजस्ट किया जाता है।

- ▶ जानिए कैसे रिटेलर और बैंक ब्याज को एडजस्ट करते हैं
- ▶ किस तरह सही ऑफर चुनकर बचत की जा सकती है
- ▶ कोई भी सामान खरीदने से पहले एक बार जरूर देख लें
- ▶ तकनीकी रूप से देखें, तो 'नो कॉस्ट ईएमआई' कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता



कैसे काम करती है नो-कॉस्ट ईएमआई

डिस्काउंट या सब्सिडी: अब मान लीजिए कि आपने 30,000 का स्मार्टफोन ईएमआई पर खरीदा। इसकी ईएमआई पर बैंक ब्याज लेना, क्योंकि यही तो उसका बिजनेस है। सामान्य ईएमआई पर बैंक 12% ब्याज दर से 12 महीने की ईएमआई बनाएगा। ऐसे में कुल लागत लगभग 31,800 रुपये हो जाती, लेकिन रिटेलर या ब्रांड आपको ब्याज जितना डिस्काउंट दे देता है। उसल में आप कुल 30,000 ही चुकते हैं। 1,800 के ब्याज का बोझ कंपनी उठा लेती है। कई ऑफर में ब्याज सीधे नहीं दिखाया जाता। यानी आपको लगता है नो-कॉस्ट ईएमआई है, कोई ब्याज नहीं लगेगा। जैसे कि प्रोडक्ट का केश प्राइस 30,000 है। डिस्काउंट के साथ यह 27,000 में मिलता। ईएमआई पर वही प्रोडक्ट 30,000 के कुल ईएमआई में बांट दिया गया। आपको लगता है नो-कॉस्ट ईएमआई है, लेकिन आप 3000 रुपये की बचत गंवा रहे।

क्या वाकई मुफ्त है नो-कॉस्ट ईएमआई: अगर तकनीकी रूप से देखें, तो नो-कॉस्ट ईएमआई कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता। अगर रिटेलर सब्सिडी दे रहा है तो उसका खर्च कंपनी वहन कर रही है, जिससे उसका मार्जिन घटता है। अगर कीमत बढ़ाकर एडजस्ट किया गया है तो ग्राहक को इनडायरेक्ट तरीके से ब्याज ही चुकना पड़ता है।
कई बार नहीं मिलते ऑफर: कई बार नो-कॉस्ट ईएमआई के साथ अन्य डिस्काउंट ऑफर उपलब्ध नहीं होते। यानी केशलेक या कूपन का फायदा हाथ से जा सकता है। जैसे कई बार कंपनियां 30,000 के प्रोडक्ट का एएमआई ही 32,000 लिख देती हैं और नो-कॉस्ट ईएमआई पर बेचती हैं। ग्राहक को लगता है कि ब्याज नहीं लगा, जबकि उसने पहले से बड़ी हुई कीमत चुका दी।

क्या है आरबीआई का नियम

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 2013 में साफ किया था कि नो-कॉस्ट ईएमआई स्कॉप्स में ब्याज शुल्क दिखाया जा सकता है। इसके बाद एनबीएफसी और बैंकों ने इन ऑफर्स को अलग तरह से डिजाइन किया। अब प्रिक्टिकली ब्याज का बोझ मैन्युफैक्चरर या रिटेलर उठाना है, ग्राहक को 'नो-कॉस्ट' का अनुभव देने के लिए।

इन बातों पर जरूर दें ध्यान

एमआरपी और सेलिंग प्राइस चेक करें। जैसे कि क्या ईएमआई प्रोडक्ट अगली डिस्काउंट प्राइस पर मिल रहा है या बड़ी हुई कीमत पर? ऑफर्स की तुलना करें। कई बार सीधा डिस्काउंट ऑफर लेना नो-कॉस्ट ईएमआई से सस्ता पड़ता है। प्रोसेसिंग फीस देखें। कुछ बैंकों में प्रोसेसिंग फीस या जीएसटी अलग से लिया जाता है। टेब्योर को जरूर समझें। जैसे कि ईएमआई कितने महीनों में देंगे और क्या पहले भुगतान करने पर कोई डिस्काउंट लगेगा? अपने बजट में भी ध्यान दें। किस्तों में पेमेंट आसान लगता है, लेकिन खर्च बढ़ाने का लालच भी दे सकता है।

सैलरी का सिर्फ 10 पर्सेंट हर महीने बचाकर भी बन सकते हैं करोड़पति

- पहले लक्ष्य तय करें, इसके बाद लंबे समय तक निवेश में डटे रहें
- 30 साल में बनाया जा सकता है 1.23 करोड़ का फंड
- छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश बना देगा धनवान

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

बचत



पूरा कैलकुलेशन

आपने 30 साल तक हर महीने 4,000 की एसआईपी की। इस तरह उसका कुल रिटर्न 4,000 x 12 महीने x 30 साल = 14,40,000 रुपये हुआ। इस निवेश पर उसे 12% की औसत वार्षिक रिटर्न दर मिली। कंपाउंडिंग के जादू से 30 साल बाद उसका निवेश बढ़कर 1,23,23,893 रुपये हो गया। यानी, 14.4 लाख रुपये निवेश करने पर उसे 1,08,83,893 का रिटर्न मिला। यह दिखाता है कि लंबे समय तक नियमित निवेश करने से छोटी रकम भी करोड़ों में बदल सकती है।

युवाओं के लिए बड़ी सीख

यह कहानी हर युवा के लिए प्रेरणादायक हो सकती है जो अपनी रकम को बढ़ाना चाहते हैं। अक्सर लोग सोचते हैं कि रिटायरमेंट या भविष्य की प्लानिंग के लिए बड़ी सैलरी या मोटा निवेश जरूरी है, लेकिन सही रणनीति, अनुशासन और जल्दी शुरुआत से यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। अगर आप 10 साल बाद यानी 32 साल की उम्र में निवेश शुरू करता, तो उसे 20 साल का समय मिलता। इतने समय में उसका निवेश लगभग आधा ही होता। इससे साबित होता है कि निवेश जितनी जल्दी शुरू करें, उतना बेहतर।

ये मंत्र भी अपनाएं

- वित्तीय शिक्षा प्राप्त करें**
वित्तीय शिक्षा आपको पैसे के प्रबंधन, निवेश व बचत के बारे में जानने में मदद करेगी। यह आपको वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस योजना बनाने में मदद करेगी।
- नियमित बचत करें**
नियमित बचत करना करोड़पति बनने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अपने आय का एक हिस्सा नियमित रूप से बचाएं और इसे निवेश में लगाएं।
- निवेश करें**
निवेश करना आपके पैसे को बढ़ाने का एक अच्छा तरीका है। शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, और रियल एस्टेट जैसे विभिन्न निवेश विकल्पों का पता लगाएं और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करें।
- व्यवसाय शुरू करें**
व्यवसाय शुरू करना करोड़पति बनने का एक अच्छा तरीका है। अपने आय का एक हिस्सा नियमित रूप से अनुसंधान शुरू करें और इसे सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करें।
- नेट वर्थ बढ़ाएं**
नेट वर्थ बढ़ाने के लिए, अपनी आय बढ़ाने और व्यय कम करने पर ध्यान दें। अपने खर्चों का भुगतान करें और अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करें।
- धैर्य रखें**
करोड़पति बनने में समय लगता है। धैर्य रखें और अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें।
- वित्तीय अनुशासन**
वित्तीय अनुशासन करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुशासन में रहें और अपने व्यय को नियंत्रित रखें।
- नेटवर्क बनाएं**
नेटवर्क बनाना करोड़पति बनने में मदद कर सकता है। अपने उद्योग में लोगों से मिलें और अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए नेटवर्क का उपयोग करें।
- जोखिम उठाएं**
जोखिम उठाना करोड़पति बनने का एक हिस्सा है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जोखिम उठाने के लिए तैयार रहें, लेकिन जोखिम को प्रबंधित करने के लिए भी तैयार रहें।
- सीखना जारी रखें**
सीखना जारी रखना करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उद्योग में नवीनतम रुझानों और तकनीकों के बारे में सीखें व अपने कौशल को बेहतर बनाने के लिए काम करें।

प्लानिंग जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे निवेश की रफ्तार को भी बढ़ाएं, इससे जल्द पैसा बढ़ेगा

अनावश्यक खर्च करने से बचें, ऑफर का देखकर ललचाएं नहीं निवेश की अच्छी रणनीति बनाएं और अपने भविष्य को सुरक्षित करें

जीवन में आगे बढ़ने के साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, स्टेप अप एसआईपी आपको अमीर बनाने में निभाएगी बड़ी भूमिका

सुझाव

अगर आप भी निवेश करके अपना पैसा बढ़ाना चाहते हैं तो आपको थोड़ा संयम बरतना होगा और जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ अपने निवेश को भी बढ़ाना होगा। तभी आप अपने धन को बढ़ा पाएंगे और बुढ़ापे में खुद को आर्थिक रूप से मजबूत रख पाएंगे। देखने में आता है कि नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, जो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। आइए समझते हैं कि स्टेप-अप एसआईपी (एसआईपी राशि को बढ़ाना) क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

स्टेप-अप एसआईपी क्या है?

स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को हर अंतराल पर (साप्ताहिक या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं।
आपकी बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल
जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।
महंगाई को मात देने के लिए निवेश जरूरी
हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में



होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक स्थान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।
बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें
स्टेप-अप एसआईपी के जरिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लक्जरी कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हासिल कर सकते हैं।
चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू
हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ्रक देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत कहते हैं।

स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- ▶ मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
- ▶ पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- ▶ दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- ▶ तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- ▶ धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब भर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

स्टेप-अप एसआईपी बेहतरीन तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे। तो, क्या आप निवेश का सही कदम उठाने के लिए तैयार हैं?
ऐसे तैयार करें निवेश की रणनीति
विविधीकरण: विविधीकरण एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को विभिन्न परिसंपत्तियों में फैलाते हैं, जैसे कि शेयर, बॉन्ड, रियल एस्टेट, और अन्य। इससे जोखिम कम होता है और रिटर्न बढ़ सकता है।
लंबी अवधि का निवेश: लंबी अवधि का निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को लंबी अवधि के लिए रखते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।
नियमित निवेश: नियमित निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप नियमित रूप से एक निश्चित राशि निवेश करते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।
जोखिम प्रबंधन: जोखिम प्रबंधन एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को जोखिम को प्रबंधित करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।
वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश: वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करते हैं। इससे आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।
निवेश की लागत को कम करना: निवेश की लागत को कम करना एक महत्वपूर्ण रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश की लागत को कम करते हैं। इससे आपको अपने रिटर्न को बढ़ाने में मदद मिलती है।
नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना: नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश पोर्टफोलियो की समीक्षा करते हैं और आवश्यकतानुसार बदलाव करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।

खबर संक्षेप

राष्ट्रवादी परिवर्तन पार्टी ने की मुआवजे की मांग

भिवानी। राष्ट्रवादी परिवर्तन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लीलाराम प्रजापति ने प्रदेश सरकार से बारिश के कारण खराब हुई फसलों के लिए किसानों को प्रति एकड़ 60 हजार रुपये का मुआवजा देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि सीजन में हुई भारी बारिश से किसानों की फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गई हैं। प्रजापति ने सरकार से तुरंत विशेष गिरदावरी करवाकर किसानों के नुकसान की भरपाई करने का आग्रह किया। उन्होंने जिला प्रशासन व सरकार से बर्बाद हुई फसलों की ऐवज में 60 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग की।

खोखले दावों का खासियाजा मुगत रहे किसान : मुकेश भिवानी

भिवानी। इस साल की बेतहाशा बारिश ने पूरे देश में जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है, जिससे लोग भारी परेशानियों का सामना कर रहे हैं। भिवानी जिले में हालात इतने बदतर हो गए कि लोगों को अपने घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा है। वहीं जिन किसानों ने फसलें उगाने के लिए दिन-रात मेहनत की थी, उनकी सारी मेहनत पर पानी फिर गया है, ये बात युवा कांग्रेस नेत्री एडवोकेट मुकेश ढाणीमाहु व अधिवक्ता अरुण ने कही।

भजन-कीर्तन व पूजा उपरांत किया भगवान श्रीगणेश का विसर्जन नाचते-गाते भक्तजन पहुंचे नहर तक व भगवान गणेश का किया विसर्जन

■ सकारात्मकता और नई शुरुआत का संदेश देता है भगवान श्रीगणेश का विसर्जन : पोपली

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

भारत में सबसे अधिक प्रतिष्ठित और व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है गणेश चतुर्थी। इस त्योहार के दौरान लोगों में अद्वितीय जोश और उत्साह देखने को मिलता है। इसी उत्साह के साथ जामपुर सेवा समिति ने भी इस साल गणेश चतुर्थी का भव्य आयोजन किया। कृष्ण कॉलोनी स्थित श्री राम मंदिर में जामपुर सेवा समिति द्वारा 10 दिनों तक चले भजन, कीर्तन और पूजा-अर्चना के बाद शनिवार को भगवान श्री गणेश की प्रतिमा का विसर्जन किया गया।

इस अवसर पर भक्तों का उत्साह चरम पर था। विसर्जन के लिए भक्तजन ढोल-नगाड़ों और

बैज-बाजे के साथ नाचते-गाते हुए हरिगण विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पास स्थित नहर पर पहुंचे। भक्तों के जयकारों और बप्पा मौरिया के नारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। सभी ने मिलकर भगवान गणेश की प्रतिमा को नहर में विसर्जित किया और उनसे अगले साल फिर से जल्दी आने की प्रार्थना की। जामपुर सेवा समिति के प्रधान गोपाल कृष्ण पोपली और महासचिव विनोद मिश्र ने इस अवसर पर गणेश चतुर्थी और विसर्जन के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि गणेश चतुर्थी का त्योहार भगवान गणेश के जन्म का प्रतीक है, जिन्हें बुद्धि, समृद्धि और सौभाग्य के देवता के रूप में पूजा जाता है। यह त्योहार सकारात्मकता और नई शुरुआत का संदेश देता है।

उन्होंने बताया कि 10 दिनों तक चलने वाले इस उत्सव के बाद विसर्जन का खास महत्व होता है। विसर्जन का अर्थ है कि भगवान गणेश अपनी सभी सकारात्मक ऊर्जा और आशीर्वाद के साथ अपने

भक्तों से विदा लेते हैं, और अपने साथ सभी बाधाओं और नकारात्मकता को लेकर चले जाते हैं। यह एक चक्र का अंत और नई शुरुआत का प्रतीक भी है। जामपुर सेवा समिति ने इस आयोजन को

नन्हें मुन्ने बच्चों ने प्रस्तुतियां देकर मनाया श्रीगणेश महोत्सव

हरिभूमि न्यूज ►► घरखी दादरी

किसी भी देवी-देवता को जब हम प्रसाद अर्पित करते हैं तो यह केवल कोई मिठाई, फल या व्यंजन से बंदकर हमारी हिंदू धर्म संस्कृति के प्रति आस्था का अग्रिम रूप बन जाता है। उन्होंने कहा कि हम सबको उन देवों का आभारी होना चाहिए। इसके उपरांत जब प्रसाद का वितरण सभी के बीच करते हैं तो वो दर्शाता है कि परमात्मा की कृपा हम पर हुई, ऐसा ही आशीर्वाद वो सबको बिना किसी भेदभाव के दें, ये बात श्रीगणेश महोत्सव मण्डल प्रधान बजरंगलाल सितोकपुरिया ने कही।

भक्तों से विदा लेते हैं, और अपने साथ सभी बाधाओं और नकारात्मकता को लेकर चले जाते हैं। यह एक चक्र का अंत और नई शुरुआत का प्रतीक भी है। जामपुर सेवा समिति ने इस आयोजन को



उन्होंने कहा कि उनकी अगुवाई में इन दिनों गांधी नगर स्थित चेतनराम सत्संग भवन परिसर में इन दिनों गणेश उत्सव को लेकर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत शाम का पूजन व खीर का प्रसाद प्रधान बजरंगलाल व उनके

परिजनों द्वारा लगाते हुए श्रद्धालुओं के बीच वितरण किया। नन्हें मुन्ने बच्चों ने अपनी सांस्कृतिक, गीत, संगीत से परिपूर्ण प्रस्तुतियां दीं। उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन पर मंडल कार्यकारिणी ने उन्हें सम्मानित करते हुए उपहार भेंट कर हौसला अफजाई की।

सफल बनाने के लिए सभी भक्तों और सहयोगियों को धन्यवाद दिया और उम्मीद जताई कि अगले साल का उत्सव और भी धूमधाम से मनाया जाएगा।

हरामन गाड्डी, सतपाल नरूला, सुरेश कुमार गाड्डी (शौलम), राजकुमार जावा, महेंद्र हंस, रवि चांदना, सुनील वधवा, मोहन सेहरा, बालकिशन सनेजा, और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।



पीएच शिक्षण संस्थान परिसर में विद्यार्थियों ने मानव शृंखला बनाकर दी भगवान गणपति को विदाई

घरखी दादरी। पीएच शिक्षण संस्थान परिसर में विद्यार्थियों ने भगवान गणेश की मूर्ति विसर्जन के दिन मानव शृंखला बनाकर भगवान गणपति को विदाई दी। इस अवसर पर गणेशजी की छवि को धरा पर उतारकर सभी के सामने अनेकौ झलक प्रस्तुत की। विद्यालय में गणेश विसर्जन के अवसर पर बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। खास बात ये रही कि इस बार बच्चों ने अपनी मेहनत एवं कल्पनाशक्ति से मानव शृंखला बनाकर भगवान गणेश की आकृति बनाई। बच्चों को इस पहल ने न केवल उनकी प्रतिभा को उजागर किया, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। प्रधानाचार्य ओपी तिवारी व शिक्षकों व स्थानीय लोगों ने बच्चों की रचनात्मकता की सराहना की और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बताया।

निमड़ीवाली के ग्रामीणों ने पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए भेजी राहत सामग्री

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

गांव निमड़ीवाली मानवता और आपसी भाईचारे की मिसाल बन गया। गांव के ग्रामीणों ने एकजुट होकर पंजाब में बाढ़ से प्रभावित लोगों के लिए बड़े पैमाने पर राहत सामग्री एकत्रित कर एक वाहन को रवाना किया।

इस नेक पहल में ग्रामीणों ने अनाज, सूखे खाद्य पदार्थ, दवाइयां, कपड़े और अन्य जरूरी सामान इकठ्ठा किया, जिसे अब बाढ़ पीड़ितों तक पहुंचाया जाएगा। इस बार में ग्रामीण राकेश आर्य ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से पंजाब के कई हिस्से भारी बारिश और बाढ़ की चपेट में हैं, जिससे जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जिसके बाद निमड़ीवाली गांव के युवाओं और बुजुर्गों ने मिलकर बाढ़ पीड़ितों की



ये रहे मौजूद: इस अवसर पर योगेश्वर बोहरा, लीलाराम सरपंच, जगज्जल बोहरा, चंद सिंह बोहरा, मीर सिंह फोडी, कालिया सिंहमार गुणपाल गिल, विरमान गिल, दिलू मंडेर, करतार गिल, वजीर शर्मा पं, बलजीत बोहरा, सतबीर गिल, रामचंद्र खुडिया, राकेश जालवाल, बिल्लू सिंहमार सहित अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

मदद करने का फैसला लिया तथा ग्रामीणों ने राहत सामग्री एकत्रित करना शुरू की। इस अभियान में गांव के हर घर से योगदान मिला।

■ मुश्किल समय में एक-दूसरे का सहयोग ही सबसे बड़ी ताकत : राकेश आर्य

उन्होंने बताया कि एकत्रित की गई सामग्री में सबसे ज्यादा जोर खाने-पीने की चीजों पर था। इसमें चावल, दाल, आटा, बिस्किट, पानी की बोतलें और सूखे मेवे शामिल हैं। इसके अलावा बाढ़ के बाद बीमारियों के खतरे को देखते हुए, फ्रंट एड किट और जरूरी दवाइयां भी भेजी गई हैं।

कपड़ों में कंबल, चादरें और बच्चों के कपड़े भी शामिल हैं। ग्रामीण राकेश आर्य ने कहा कि शनिवार को राहत सामग्री का वाहन बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के लिए रवाना किया गया।

गांव प्रेमनगर में बाढ़ के चलते बाढ़ पीड़ितों को वितरित किया राशन

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

अत्याधिक बारिश के कारण गांव प्रेमनगर में बनी बाढ़ जैसी स्थिति से प्रभावित लोगों की मदद के लिए गांव प्रेमनगर में राशन वितरण का क्रम जारी है। इसी कड़ी में बैंक से सेवानिवृत्त मैनेजर दलबीर गोडवाल ने गांव के बाढ़ पीड़ितों और जरूरतमंदों की सहायता के लिए सराहनीय कदम उठाया। उन्होंने अपनी निजी बचत से 50 किलोग्राम चीनी, 105 किलो आटा और पांच किलो चाय खरीदकर जरूरतमंद परिवारों को वितरित किया।

दलबीर और ग्राम विकास एवं शिक्षा समिति की तरफ से शनिवार को जरूरतमंदों को राशन किट वितरित की। समिति के प्रधान जोगेंद्र सिंह बूरा ने लोगों की मदद करने के लिए गोडवाल का आभार जताया। सरपंच राजेश ने इस पहल को ग्रामवासियों के

बाढ़ पीड़ितों की बीमारी का निःशुल्क इलाज करेगा मलिक अस्पताल

हरिभूमि न्यूज ►► तोशाम

गांव सागवान में जलभराव से ग्रामीणों का जन-जीवन अस्त-व्यस्त होने के पश्चात गांव सागवान के बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों के लिए तोशाम मलिक अस्पताल की टीम ने मानव हित में कदम उठाते हुए अच्छी पहल कर ग्रामीणों के किसी भी तरह अस्वस्थ होने पर निशुल्क इलाज करने की घोषणा की है।

उल्लेखनीय है कि तोशाम क्षेत्र के गांव सागवान में पिछले एक महीने से ज्यादा समय से जलभराव होने से ग्रामीणों का जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया था और गांव में तकरबीन घरों में पानी घुस गया यह पानी पिछले करीबन एक महीने से अधिक समय से घरों तथा गांव की गलियों में खड़ा है। जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारी फैल



सकती है ऐसे में तोशाम के मलिक अस्पताल की टीम ने गांव सागवान के बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों कि बीमारी का निशुल्क इलाज करने का फैसला लिया है। यह जानकारी देते हुए मलिक अस्पताल तोशाम के संचालक राजेंद्र मलिक ने बताया कि सागवान के बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों की मदद के लिए मलिक अस्पताल तोशाम की तरफ से बाढ़ ग्रस्त ग्रामीणों का निशुल्क इलाज किया

■ मानव हित में बाढ़ पीड़ितों के लिए तोशाम के मलिक अस्पताल ने की सराहनीय पहल
■ सागवान में जलभराव से ग्रामीणों का जन-जीवन अस्त-व्यस्त

जाएगा। राजेंद्र मलिक का कहना था कि मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है गांव सागवान के ग्रामीणों पर बाढ़ के कारण मुसीबत आई हुई है हम सब का फर्ज बनता है कि मानवता के नाते जो हमसे हो सके हमें बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों की मदद करनी चाहिए। मलिक अस्पताल तोशाम की टीम ने फैसला लिया है कि गांव सागवान के बाढ़ पीड़ित ग्रामीणों का निशुल्क इलाज किया जाएगा।

पोकलैंड से मिट्टी का बांध बनाकर जमालपुर 2 गांव को किया सुरक्षित



हरिभूमि न्यूज ►► बवानीखेड़ा

अबकी बार बारिश ने पिछले कई वर्षों के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। भिवानी जिले के बहुत सारे गांव डूब चुके हैं। फसलें डूबने के पश्चात पानी ने गांव की तरफ रुख कर लिया है। गांव डूबने के अंदेश से जमालपुर 2 की एकता समिति ने सज्जान लेते हुए गांव को डूबने से बचाने के लिए आगे आई है।

एकता समिति ने सरहनीय कार्य करते हुए जमालपुर 2 में आई बाढ़ के दौरान लोगों को सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से पोकलैंड की सहायता से मिट्टी का बांध बनाकर लोगों को

सुरक्षित करने का काम किया है। ताकि पानी घरों में ना घुसे और लोगों को कोई जान माल की हानि ना हो। कपिल सांगवान ने बताया कि गांव में भी बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। और चारों तरफ पानी ही पानी है। ऐसे में एकता समिति जमालपुर 2 लोगों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर है। और ग्रामीणों को किसी भी प्रकार कि सहायता पड़ी एकता समिति तैयार है। पहले भी एकता समिति गांव में समय-समय पर सरहनीय कार्य करती रहती है। उन्होंने ग्रामीणों को विश्वास दिलाया कि एकता समिति गांव के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है।

बाढ़ प्रभावित पशुओं को बचाने को पशुपालन विभाग ने गटित की टीमें

भिवानी। पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने बाढ़ प्रभावित पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए टीमों का गठन किया है। यह जानकारी देते हुए पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. रविंद्र सहरावत ने बताया कि जिन क्षेत्रों में पानी भरा हुआ है, उन क्षेत्रों के पशु चिकित्सकों को आदेश दिए गए हैं कि वे टीमें पशुओं के उपचार के तत्पर रहे और बीमार पशुओं के लिए दवाइयां इत्यादि का प्रबंध रखे।

■ इंसानों की तरह पशुओं को भी बीमारी से बचाना होनी चाहिए प्राथमिकता : डॉ. रविंद्र

उन्होंने कहा कि इंसानों की तरह पशुओं का भी बीमारी से छुटकारा दिलवाने को प्राथमिकता आधार पर कार्य करें। उपमंडलाधिकारी डॉ. राजेश जाखड़ ने पशुपालकों से अपील की कि वे पशुओं को सूखे में रखे, उनके बांधने के स्थान पर पानी जमा न हो और पशुओं के लिए सूखे चारे का प्रबंध करें। डॉ. विजय सनसनवाल ने बताया कि पशुओं में मक्खी-मच्छर की वजह से बहुत सी बीमारियां फैल सकती हैं, इसलिए बाढ़ में पशुओं पर मच्छर-दादी न लगाए। श्रीगौशाला ट्रस्ट के प्रधान मोहनलाल ने बताया कि जिन गौशालाओं में पानी भर गया है, उन गौशालाओं को वे चारा उपलब्ध करवा सकते हैं, जिसके लिए उनकी गौशाला में संपर्क किया जा सकता है।



देवनगर में जलभराव की समस्या कांग्रेसियों ने लोगों संग जताया रोष

भिवानी। हांसी रोड स्थित देवनगर कॉलोनी में पिछले 5-6 दिनों से भारी जलभराव की समस्या ने क्षेत्रवासियों का जीना मुहाल कर दिया है। बारिश के पानी की निकासी न होने के कारण कॉलोनी की हर गली में दो से ढाई फुट तक पानी भर गया है, जिससे लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कॉलोनीवासियों का कहना है कि जलभराव की वजह से बच्चों को स्कूल जाने, महिलाओं को मंदिर और लोगों को काम पर जाने में भारी परेशानी हो रही है। इस समस्या से परेशान होकर क्षेत्रवासियों ने शनिवार को कांग्रेस के शहरी जिला अध्यक्ष प्रदीप गुलिया जीों के नेतृत्व में रोष प्रदर्शन किया और सरकार व प्रशासन के प्रति अपना गुस्सा जाहिर किया। गुलिया ने कहा कि सरकार और प्रशासन आमजन की समस्याओं का समाधान करने की बजाय बड़े-बड़े दावे करने में व्यस्त हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रशासन की नाकामी के कारण देवनगरवासी कई दिनों से समस्या से जूझ रहे हैं।

शिक्षक लक्ष्मण गौड़ को मिला सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस पर आयोजित राष्ट्रीय शिक्षक दिवस महोत्सव एवं सम्मान समारोह में राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री अवाड़ी मास्टर लक्ष्मण गौड़ को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया।



मास्टर लक्ष्मण गौड़ राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दिनदो में कार्यरत हैं और ये पुरस्कार उन्हें उनकी सराहनीय सामाजिक सेवाओं व शिक्षा क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मान समारोह में मुख्यातिथि पूर्व शिक्षामंत्री प्रोफेसर रामबिलास शर्मा व विशिष्ट अतिथि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. पवन कुमार ने दिया। अतिथियों ने उन्हें सम्मान स्वरूप सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार, शहीद गुलाब सिंह पार्क आदि हर स्थान पर पानी जमा है। लोग शहर से पलायन करने में लगे हुए हैं तो कुछ योजना बना रहे है। वहीं दूसरी ओर प्रशासन भी पानी निकालने में लगा है।

आधार कार्ड बनवाने आई महिला 3 वर्षीय पुत्री संग नाले में गिरी

हरिभूमि न्यूज ►► बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा में अधिकतर एरिया में चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई देने लगा है ऐसा प्रतीत होने लगा है मानों बवानी खेड़ा जलमय हो गया है। इसका नजारा बवानी खेड़ा के नागरिक अस्पताल से लेकर मुख्य हांसी भिवानी मार्ग, बाड़पास, पुर रोड, बिजली निगम, हांसी चुंगी, जमालपुर रोड, दादी गौरी मंदिर के समीप, हनुमान ढाणी, रेलवे स्टेशन, शहीद गुलाब सिंह पार्क आदि हर स्थान पर पानी जमा है। लोग शहर से पलायन करने में लगे हुए हैं तो कुछ योजना बना रहे है। वहीं दूसरी ओर प्रशासन भी पानी निकालने में लगा है।

■ लोग पलायन करने में लगे हुए हैं तो कुछ योजना बना रहे है

लेकिन इस आपदा में लोग आहत हो रहे हैं व अपने आपको लुटा महसूस कर रहे हैं। शुक्रवार को सुबह नीरू अपने पति विजय व तीन माह की पुत्री संग बिलियाली से बवानी खेड़ा आधार कार्ड बनवाने आई और नागरिक अस्पताल के सामने सड़क पर पानी जमा होने के कारण वह नगर पालिका में जाने के लिए सड़क क्रॉस करने लगी और नाला व गडढा होने के कारण महिला अपनी पुत्री संग पानी में गिर गईं। पास खड़े समाजसेवी हरीश ने मां बेटी को वहाँ से बाहर निकाला। हालांकि मां बेटी स्वस्थ थी और बड़ा हादसा टल गया।

नया प्रधान बोले- संकट की घड़ी में सभी को मिलकर आपदा से निपटना होगा पलायन किए परिवारों के लिए खाने-पीने की व्यवस्था की

हरिभूमि न्यूज ►► बवानीखेड़ा

बारिश सहित बाहरी क्षेत्र से बवानी खेड़ा शहर में पानी आने व लोगों की बस्तियों की बस्तियां डूबने से बेघर हुए परिवारों के पलायन करने के लिए नया प्रधान सुंदर अत्री आगे आए हैं और उन्होंने ऐसे परिवारों के रहने व खाने पीने की व्यवस्था की। उन्होंने डॉ. हेड ग्वार सभागार, अग्निशमन भवन, ओड धर्मशाला, रैन बसेरा, चैपाले आदि स्थानों पर रहने की व्यवस्था की है।

नया प्रधान सुंदर अत्री ने बताया कि अनेक वाडों का स्तर नीचे होने के कारण घरों में पानी घुस गया और लोग मजबूरीवश पलायन करने लगे हैं इसलिए उनके लिए



प्रयास कर रहे हैं हालांकि हांसी चुंगी से सुंदर ब्रांच तक पहले की एक पाइप लाइन पानी निकासी के लिए चल रही है और एक पालप लाइन इसके साथ साथ लगाई जाएगी जिससे शहर के पानी की निकासी को जल्द से जल्द दुरुस्त कराया जा सके। वहीं शुक्रवार रात को पंप सैट में दिक्कत आने के कारण नया

प्रधान सुंदर अत्री ने मौके पर पहुंचकर उसे दुरुस्त करवाया। इस अवसर पर उनके साथ एसडीओ जयसिंह, जेई सचिन, सुनील जांगड़ा, भरत गुर्जर, सुन्दर कुमार, सुरेश कुमार, भूप शर्मा, संजय कुमार, नवीन गक्खड़, बलराम गुर्जर, संजय, समाजसेवी प्रवीन हंस सहित अनेक मौजूद रहे।

बाढ़ प्रभावित लोगों की मदद के लिए आगे आए विद्यार्थी

भिवानी। पंजाब व हरियाणा में आई विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए केंद्र स्थित बाबा मुंशीपा रज्जुकेशन एड स्पोर्ट्स स्कूल के विद्यार्थी मिसाल बनाकर सामने आए हैं। स्कूल के बच्चों ने एक नेक पहल करते हुए बाढ़ पीड़ितों के लिए आर्थिक सहायता जुटाने का काम किया। स्कूल प्राचार्य रमेश रंगा ने बताया कि उनके स्कूल के विद्यार्थी खेल एवं शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी बड़-बड़कर हिस्सा लेते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा स्कूल ऐसे कार्यक्रमों को प्राथमिकता देता है, ताकि बच्चों में सेवाभाव और संवेदनशीलता की भावना विकसित हो सके। रंगा ने बताया कि बच्चों ने एक दान पात्र बनाया, जिसमें पैसे इकट्ठा किए। यह राशि पंजाब व हरियाणा के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में भेजी जाएगी। हंस मौके अध्यक्ष पवन कुमार, सोमवीर, मुकेश, बलजीत, मोहित, शिक्षिका सुलोचना व पूजा चौहान ने अपनी ओर से आर्थिक मदद दी।



खबर संक्षेप

संजय कुमार को नियुक्त किया गया था
बहल। बहल पुलिस थाना प्रभारी जयभगवान का शनिवार को तबादला हो गया। उनकी जगह पर निरीक्षक संजय कुमार को नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है। शनिवार को ही नए थाना प्रभारी ने अपना कार्यभार संभाल लिया है। जयभगवान को बहल से एसपी ऑफिस भिवानी भेजा गया है जबकि जुड़े थाना प्रभारी संजय को बहल के नए थाना प्रभारी का कार्यभार दिया गया है। नए प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि उनकी प्राथमिकता रहेगी कि क्षेत्र में अपराध पर अंकुश लगाकर कानून व्यवस्था को दुरुस्त किया जाए।

एक दिवसीय लाइफ स्किल प्रशिक्षण संपन्न
तोशाम। आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तोशाम में एक दिवसीय लाइफ स्किल (एडवॉस) प्रशिक्षण संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में विद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के रिसॉर्स पर्सन अनिल कुमार अरोड़ा, प्रवक्ता भौतिकी, ने विद्यालय में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों को नयी शिक्षा नीति के अनुरूप विद्यार्थियों के कौशल को चिन्हित करके उसके कौशल को और धारादार बनाने के टिप्स दिए। इस दौरान उन्होंने बताया कि कौशल परक शिक्षा से राष्ट्र की उन्नति के मार्ग भी खुलते हैं।

पौधरोपण कर मनाया स्थापना दिवस

भिवानी। अधिवक्ता परिषद की भिवानी इकाई ने शनिवार को जिला बार एसोसिएशन प्रांगण में पौधरोपण कर अपना स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम जिलाध्यक्ष सुमित जांगड़ा की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें जिला बार एसोसिएशन के प्रधान संदीप तंवर व सचिव विनोद मुंडालिया ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर जिला महामंत्री अमित बंसल ने बताया कि कार्यक्रम अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के निर्देशों के अनुसार आयोजित किया।

आज दिखेगा साल का आखिरी चंद्र ग्रहण

भिवानी। हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति के जिला अध्यक्ष जगदीश सिंह और सचिव नंदकिशोर सोलंकी ने बताया है कि 7 सितंबर को साल का आखिरी चंद्र ग्रहण लगने वाला है। यह एक अद्भुत और महत्वपूर्ण खगोलीय घटना होगी, जिसे भारत समेत पूरी दुनिया देख सकेगी। उन्होंने बताया कि यह चंद्र ग्रहण 7 सितंबर की रात 8 बजकर 58 मिनट से बजे शुरू होगा तथा 8 सितंबर की सुबह 2 बजकर 25 मिनट तक चलेगा। इसकी कुल अवधि 5 घंटे 27 मिनट होगी। इस दौरान चंद्रमा गहरे लाल रंग का दिखाई देगा, जिसे ब्लड मून या कॉपर मून भी कहा जाता है।

बीके विद्यालय में मनाया गया शिक्षक दिवस

भवानीखेड़ा। बीके के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 'शिक्षक दिवस' बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्पण करके उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विद्यार्थियों के लिए हर दिन शिक्षक दिवस होता है। उन्होंने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और आस्थावान हिंदू विचारक थे। उनका जन्म 5 सितंबर 1888 में तमिलनाडु में हुआ।

श्रद्धालुओं और राहगीरों को पिलाया सरबत

चरखी दादरी। सरदार झाड़ूसिंह चौक स्थित माकेट के दुकानदारों ने मीठे जल की छबील लगाई। प्रधान डॉ. सुदेश वर्मा की अगुवाई में सभी ने चौक से गुजरने वाली भगवान श्रीगणेश विसर्जन यात्राओं में शामिल श्रद्धालुओं व राहगीरों को मीठा जल व शरबत पिलाया। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि नियमित अंतराल पर नगर व आसपास में होने वाले धार्मिक आयोजनों में योगदान दें।

नेहरू पार्क में जमा गंदे पानी में पेड़-पौधे हो रहे खराब अपनी बدهाली की दास्तां बयां कर रहा शहर का नेहरू पार्क

राकेश मट्टी **भिवानी**
पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल ने करोड़ों रुपये खर्च करके शहरवासियों को पहले पार्क रूप में नेहरू पार्क की सौगात दी थी। उन्होंने गहरी जोहड़ी में मिट्टी भरवाकर उसपर नेहरू पार्क तैयार करवाया, जो शहरवासियों के सैर स्पॉट एवं स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी था, जिससे शहर के सौंदर्यीकरण को भी चार चांद लगे थे। अब बरसाती पानी की निकासी नहीं होने और ठप सीवरेंज व्यवस्था ने पार्क की दशा को ही बदलकर रख दिया है, अब पार्क अपनी बدهाली की दास्तां बयां कर रहा है, जिसमें दो से ढाई फुट तक पानी जमा है।



भिवानी। नेहरू पार्क में पगंडी पर जमा सीवरेंज व बरसात के गंदे पानी में से निकलते बच्चे व पार्क में जमा सीवरेंज व बरसाती पानी में डूबे बैठने के बच्चों का दृश्य।



भिवानी। जमा सीवरेंज व बरसाती पानी में डूबे डस्टबिन व पेड़-पौधे।

सुंदर फव्वारे मन को करते थे आनंदित

नेहरू पार्क में सैर स्पॉट के लिए आए लोगों के मन को पार्क में जलती रंग बिरंगी लाइट व फव्वारे आनंदित करते थे, लेकिन काफी समय से फव्वारे नहीं चलने से शहरवासी काफी उदास थे और अब बरसाती व सीवरेंज के गंदे पानी ने पार्क को व्यथा ही बदल दी। जहां पर घूमने आना दुर्गंध का महाौल और अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने जैसा है।

पार्क में मच्छर-मक्खियों का प्रकोप
पार्क में गंदा पानी जमा होने से मच्छरों-मक्खियों का प्रकोप फैल गया है। वैसे ही बरसाती मौसम में डेगू मलेरिया बीमारी अपने पैर पसार लेती है और मच्छरों की भरमार हो जाती है। अब लोग पार्क में घूमने आने से डरने लगे हैं। शहरवासियों अब डर सताने लगा है कि कहीं कोई जहरीला मच्छर अपने डंक से उन्हें संक्रमित न कर दे, जिससे उन्हें मलेरिया व डेगू हो जाए, जो उनकी जान जोखिम में डाल दे।

था। तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल ने भिवानी शहर के लोगों को बड़ी सौगात देने एवं उनके स्वास्थ्य की चिंता करते हुए जोहड़ी को आटने का काम करवाया और उसकी जगह बहुत ही सुंदर नेहरू पार्क का निर्माण करवाया। नेहरू पार्क भिवानी शहर की शान रहा, क्योंकि ये भिवानी का सबसे पहला पार्क था। अब प्रशासन की अनदेखी एवं लापरवाही के चलते पार्क में दो से ढाई फुट तक बरसाती व सीवर का गंदा पानी जमा है, जिसकारण पेड़-पौधे व फूल-बगीची सब कुछ खराब हो रहा है।

भिवानी। जमा सीवरेंज व बरसाती पानी में डूबे डस्टबिन व पेड़-पौधे।

घास जलकर हुई खराब

एक जगह पर क्षमता से अधिक पानी जमा होने से परेशनियां भी बढ़ जाती हैं। पार्क में ज्यादा समय तक बरसाती व सीवरेंज का गंदा पानी जमा होने से घास जलकर खराब हो गई है। पहले पार्क में हर तरफ हरियाली नजर आती थी, लेकिन अब पार्क में गंदा पानी ही पानी नजर आता है, जो पेड़-पौधों, फूल व घास को जलाकर खराब कर रहा है।

कुड़ेदान व बैच हो रहे जर्जर
पानी जमा होने से धंसी पार्क में सैर करने के लिए आने वाले लोगों के पगंडी एवं टूटी टाइलें। खाने-पीने के सामान के रेपर व कूड़ा डालने के लिए जगह-जगह लोहे के कूड़ेदान रखे हैं, जो दो से ढाई फुट पानी में डूबकर जर्जर हो रहे हैं और टूट रहे हैं। पार्क में लोगों के बैठने के लिए बैच लगाए गए हैं, लेकिन ये भी पानी में डूबे हुए हैं।

साइबर अपराधों से बचने के लिए सावधानी और जागरूकता बहुत जरूरी : अंकित

महिला महाविद्यालय झोझुक्ला में विस्तार व्याख्यान का आयोजन

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

महिला महाविद्यालय झोझुक्ला में साइबर क्राइम विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता की भूमिका सहायक उच निरीक्षक अंकित कुमार ने निभाई। उन्होंने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि हम किस प्रकार साइबर अपराधों को कम करने में अपना सहयोग दे सकते हैं तथा अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। साइबर अपराध में दोषी पाए जाने पर कैसे खुद का बचाव कर



सकते हैं पर विस्तार से छात्राओं को समझाया। प्रबन्धक समिति के प्रधान एडवोकेट सुरेन्द्रपाल सिंह ने मुख्य वक्ता अंकित कुमार को उनके विस्तार व्याख्यान के माध्यम में छात्राओं को जागरूक पर आभार जताया। उन्होंने बताया कि आज डिजिटल युग में हम न चाहते हुए भी अनजाने में साइबर अपराधों में फंस रहे हैं, इनसे सुरक्षित रहने के लिए सावधानी एवं जागरूकता बहुत जरूरी है, जिससे हम और दूसरे को भी सुरक्षित रख सकते हैं। इस अवसर पर डॉ. मुन्नी चौधरी, डॉ. मन्जीत कुमारी, डॉ. सुमित्रा कुमारी तथा छात्राएं उपस्थित रही।

अलखपुरा की बेटियों ने यूपी की ओर से खेलते हुए जीता गोल्ड

भवानीखेड़ा। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन के बैनर तले खेली गई सब जूनियर नेशनल फुटबॉल चैंपियनशिप छत्तीसगढ़ के नारायण पुर में आयोजित हुई, जिसमें उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए मिनी बाजील कहे जाने वाले खंड भवानीखेड़ा के गांव अलखपुरा (सेठ छत्रसाल) की छः बेटियों ने गरिमा जाखड़, रीतिका जाखड़, कनिका जाखड़, वर्षा मीठरवाल, कीर्ति राय, नेहा यादव ने राष्ट्रीय सब जूनियर फुटबॉल प्रतियोगिता में अपना शानदार प्रदर्शन करते हुए पहले मैच में अंडमान निकोबार को 16-0 से, दूसरे मैच में पाँडिचेरी से 10-0 से विजय हासिल करते हुए, सेमीफाइनल मैच में तेलंगाना टीम को 4-1 से जीतकर, फाइनल मैच केरल को 2-1 से पराजित किया, टूर्नामेंट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए गरिमा जाखड़ को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। गांव में पहुंचने पर सभी खिलाड़ी बेटियों का वाग्वारियों व उपस्थित खेल प्रेमियों द्वारा विली जूजूस निकालकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर अलखपुरा तालब के प्रधान सुरेश जाखड़, राजदीप सरपंच, सोमदत्त, राजेश हवलदार बडसरा, मनदीप जाखड़, प्रकाश मास्टर, मनीष लाम्बा, बनीला, कोच सोनिका बिजारनीया, गोरधन पीटीआई सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं खिलाड़ी, महिला उपस्थित रहे।



राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में 11 सप्ताह के लिए चल रहे स्वच्छता अभियान की श्रृंखला के अंतर्गत दूसरे सप्ताह में स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियां सुनिश्चित की गईं। महाविद्यालय के प्रोफेसर भीष्म नारायण, डॉ. नवनीत सिंह तथा एनसीसी एएनओ डॉ. सविता, प्रोफेसर अजीत कुमार, प्रोफेसर अमित कुमार सहित अन्य शिक्षक भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

विद्यार्थियों ने निकाली जागरूकता रैली

लोहारू। पीएमश्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय विद्यार्थियों ने स्वच्छता पखवाड़े के तहत जन चेतना रैली निकालकर लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। वहीं विद्यार्थियों ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट स्पर्धा में भाग लेकर अनेक सुंदर सजावटी सामान बनाए। प्राचार्य दर्शना कुमारी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। स्वच्छता पखवाड़ा ईंचार्ज प्रतिभा ने प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट से सजावटी सामान बनाया। कार्यक्रम का लक्ष्य खराब, बेकार वस्तुओं से सुंदर-सुंदर सजावटी चीज बनाकर घर व स्कूल को सजाने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना है। चार्ट मैकिंग प्रतियोगिता से नो प्लास्टिक का संदेश दिया।

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पद पर गांव लोहारी जाटु निवासी विरेंद्र सिंह निर्विरोध चुने गए हैं। उनके निर्विरोध की घोषणा सभा की तरफ से गठित चुनावी कमेटी की तरफ से की गई। उसके बाद यहां भिवानी में स्वागत किया गया। बाद में नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष अपने पैतृक गांव लोहारी जाटु पहुंचे तो उनका गांव के लोगों ने फूलों की माला पहना कर सम्मानित किया। इस दौरान लोगों ने विरेंद्र सिंह के उपाध्यक्ष बनने की खुशी में एक दूसरे का मुंह भी मीठा करवाया। इससे पूर्व नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष विरेंद्र सिंह ने बाबा जगन्नाथ मंदिर पहुंचकर माथा टेका और विश्व शांति की कामना की।



भिवानी। नवनिर्वाचित उपप्रधान को पगड़ी बांधकर सम्मानित करते हुए।

महाविद्यालय में सफाई की

स्वच्छता अभियान की श्रृंखला का दूसरा सप्ताह

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में 11 सप्ताह के लिए चल रहे स्वच्छता अभियान की श्रृंखला के अंतर्गत दूसरे सप्ताह में स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियां सुनिश्चित की गईं। महाविद्यालय के प्रोफेसर भीष्म नारायण, डॉ. नवनीत सिंह तथा एनसीसी एएनओ डॉ. सविता, प्रोफेसर अजीत कुमार, प्रोफेसर अमित कुमार सहित अन्य शिक्षक भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।



भिवानी। महाविद्यालय में साफ सफाई करते शिक्षक व एनसीसी कैडेट्स।

स्वच्छता प्रत्येक नागरिक का दायित्व

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर त्रिलोकचंद ने की। उन्होंने स्वच्छता पर टिप्पणी करते हुए कहा कि स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है और इसे जीवन का अंग बनाना आवश्यक है। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स ने पूरे उत्साह और जिम्मेदारी के साथ भाग लिया। एनसीसी की वरिष्ठ कैडेट्स एसयूओ प्रिया, यूओ अंजु एवं यूओ विद्य ने नेतृत्व किया।

ट्रांसपोर्ट नगर न होने की वजह से बड़े वाहनों को देर सवेरे ही शहर में प्रवेश मिलता है

ट्रांसपोर्ट दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन विधायक सर्राफ ने किया संबोधित

डेढ़ सौ एकड़ में स्थापित करवाया जाएगा ट्रांसपोर्ट नगर: विधायक

करवाई जाएगी। वे शनिवार को अंतरराष्ट्रीय ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन द्वारा आयोजित ट्रांसपोर्ट दिवस पर कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रहे थे। इससे पूर्व एसोसिएशन ने भिवानी में ट्रांसपोर्ट नगर बसाने, डीजल पर जीएसटी कम करने की मांग रखी। विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि ट्रांसपोर्ट नगर स्थापित करने में देरी हुई है। उससे वाहन चालकों के लिए परेशानी जरूर बढ़ी है। उनको शहर में आने में परेशानी तो होती है। उन्होंने भरोसा

पहले वाली जगह से शुरू होगा ओवरब्रीज

विगत में शहर के व्यापारियों ने उनसे शिकायत की थी कि जो लोहारू रोड पर पुल बनने जा रहा है। उसकी लम्बाई बढ़ाई जा रही है। जिससे अनाजमंडी का मुख्य गेट पर आठ से दस टुकड़ों से पुल आगे निकल रहा है। इस पर उन्होंने सांसद धर्मवीर सिंह से इस मसले पर बात की तो उन्होंने तत्काल रेलवे अधिकारियों से बात करके शहर की लोगों की समस्या बताई। रेलवे अधिकारियों ने भी तत्काल पुरानी जगह से पुल शुरू करने की बात सहमत हो गए। अब पहले जहां से रेलवे ओवरब्रीज शुरू था। उसी जगह से अब शुरू करवाया जाएगा। जिससे लोगों को फायदा होगा। इस दौरान शहर के अनेक ट्रांसपोर्ट मोजूद रहे।

दिलायी कि जल्द ही ट्रांसपोर्ट नगर बसाने की प्रक्रिया शुरू करवाई जाएगी। यहां यह बताते चले कि बड़े शहरों की तरह भिवानी में कोई भी ट्रांसपोर्ट नगर नहीं है। ट्रांसपोर्ट नगर न होने की वजह से बड़े वाहनों को देर सवेरे ही शहर में प्रवेश मिल पाता है।



भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

महिलाएं हमारे समाज और परिवार की रीढ़ : एसपी

अंचल अस्पताल में महिला स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

पुलिस लाइन के कम्युनिटी सेंटर में पुलिस अधीक्षक भिवानी सुमित कुमार ने अंचल अस्पताल के डॉक्टर डॉ विनोद अंचल की टीम के साथ महिलाओं के लिए स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें महिला पुलिस कर्मचारियों के साथ पुलिस कर्मचारी के परिवार की महिलाओं 120 महिलाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक भिवानी सुमित कुमार ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में पहुंचने पर उप पुलिस अधीक्षक भिवानी अनुप कुमार व डॉक्टर विनोद अंचल ने अस्पताल की अन्य महिला डॉक्टर के साथ मुख्य अतिथि का स्वागत किया। पुलिस अधीक्षक ने कार्यक्रम में शामिल महिलाओं को संबोधित करते हुए एक महिलाएं हमारे समाज के साथ हमारे परिवार की भी रीढ़ होती है। अगर महिला को किसी भी प्रकार की दिक्कत हो जाती है तो

कैंसर की जानकारी दी

डॉक्टर अनिता अंचल ने महिलाओं को बताया कि कैंसर की बीमारी बहुत तेजी से हमारे जीवन में प्रवेश कर रही है। खाने पीने से लेकर हमारे लाइफ स्टाइल में भी मिलावट हो रही है। जिसके चलते हमें कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों से सावधान रहना चाहिए। डॉक्टर अनिता ने महिलाओं को कैंसर के विभिन्न प्रकार और कैंसर होने के कारण भी बताए।

वह पूरे परिवार की दिक्कत बन जाती है। जागरूकता कार्यक्रम में डॉ प्रियंका ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी महिलाएं अपनी जीवन शैली में बदलाव कर और स्वयं का ध्यान रख इस प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होने से अपने आप को बचा सकते हैं। प्रबंधक थाना शहर भिवानी निरीक्षक सत्यनारायण ने पुलिस अधीक्षक भिवानी, अंचल हॉस्पिटल से डॉ विनोद अंचल, डॉक्टर अनिता अंचल, डॉक्टर प्रियंका, डॉक्टर मीनू यादव व डॉक्टर शिल्पी के कार्यक्रम में शामिल टीम का धन्यवाद किया।

तंवर बने राजपूत सभा के उपप्रधान

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पद पर गांव लोहारी जाटु निवासी विरेंद्र सिंह निर्विरोध चुने गए हैं। उनके निर्विरोध की घोषणा सभा की तरफ से गठित चुनावी कमेटी की तरफ से की गई। उसके बाद यहां भिवानी में स्वागत किया गया। बाद में नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष अपने पैतृक गांव लोहारी जाटु पहुंचे तो उनका गांव के लोगों ने फूलों की माला पहना कर सम्मानित किया। इस दौरान लोगों ने विरेंद्र सिंह के उपाध्यक्ष बनने की खुशी में एक दूसरे का मुंह भी मीठा करवाया। इससे पूर्व नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष विरेंद्र सिंह ने बाबा जगन्नाथ मंदिर पहुंचकर माथा टेका और विश्व शांति की कामना की।



भिवानी। नवनिर्वाचित उपप्रधान को पगड़ी बांधकर सम्मानित करते हुए।

ब्रजपाल सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने

इनके अलावा गांव बौद निवासी ब्रजपाल सिंह परमार को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कंवर सिंह खरक को महामंत्री तथा प्रेम सिंह तंवर को कोषाध्यक्ष चुना गया है। इन सभी पदों के लिए एक एक नामांकन आया था। निश्चित तिथि के बाद इनके निर्वाचित घोषित कर दिया गया। अब केवल अध्यक्ष पद के लिए ही चुनाव का आयोजन होगा। इस मौके पर परमान, सुनील, प्रदीप, मनोज, कंवरपाल, करतार मास्टर, प्रदीप ठेकेदार, सते ठेकेदार, ठेकेदार पोनी, रमेश नम्बरदार, हरकेश, सरपंच मुकेश, बबलू सरपंच, सुनेख, सतबीर डिपो होल्डर, नेपाल सिंह शिक्षा बोर्ड, विनोद वर्काल, तेजा सरपंच, मीनू, सोनू व मनोज आदि मौजूद थे।

विद्यार्थियों ने शिक्षकों को ग्रीटिंग कार्ड-पैन किए भेंट

हरिभूमि न्यूज **लोहारू**

लोहारू शहर सहित उपमंडल के निजी व सरकारी विद्यालयों में शिक्षक दिवस पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। विद्यार्थियों ने शिक्षकों को हाथ का बनाया ग्रीटिंग कार्ड भेंट किया तो किसी ने पैट भेंटकर शिक्षकों का आशीर्वाद लिया। बच्चों का प्यार देखकर दिनभर विद्यालयों में स्टाफ सदस्यों के चहरो पर मुस्कान दिखाई दी तथा कई विद्यालयों में विद्यार्थियों



लोहारू। राजकीय विद्यालय में विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते एसडीएम मनोज दलाल व बीईओ विजय प्रभा। को चॉकलेट भी बांटी। एसडीएम मनोज दलाल ने पीएमश्री विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत कर अपने अध्यापन समय के अनुभव सांझा किए और कहा कि अध्यापक का पद सबसे जिम्मेदार पद होता है।



लोहारू। गोशाला पदाधिकारियों को चैक भेंट करते पूर्वमंत्री दलाल व विधायक यादव।

पूर्वमंत्री दलाल व विधायक ने गोशालाओं में चारे के लिए दिए सवा करोड़ रुपये के चेक

लोहारू। पूर्वमंत्री जेपी दलाल और महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव ने शुक्रवार को लोहारू हलके की विभिन्न गोशालाओं का दौरा किया और सरकार द्वारा गो संवर्धन एवं संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत गोशाला कमेटी को करीब सवा करोड़ रुपये की राशि के चैक प्रदान किए। पूर्वमंत्री दलाल व विधायक यादव ने लोहारू की गोशाला के लिए 24 लाख 45 हजार, पहाड़ी गोशाला के लिए 4.47 लाख,

मंडोलीकला गोशाला के लिए 8.23 लाख, बहल गोशाला के लिए 12.97 लाख, सिवानी के लिए 29.23 तथा बडवा के लिए 14.63, गुरेरा, गैडवापर, खेड़ा, किकराल व नलोई की गोशालाओं के लिए भी लाखों रुपये के चैक संबंधित पदाधिकारियों को वित्तियत किया और विधायक यादव ने कहा कि भाजपा सरकार गौमत्त सरकार है। सरकार गौमत्त के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयत्नक है।

जब कोई अपना हो परेशान-तनावग्रस्त कुछ देर रहने दें उसे अपने मन के साथ

हम सभी के जीवन में परेशानियाँ और तनाव के क्षण आते रहते हैं। ऐसे में कुछ लोग दूसरों से सलाह लेने में असहज महसूस करते हैं, वे नहीं चाहते कि उनसे कोई सवाल पूछा जाए। वे कुछ समय तक अपने मन के साथ एकांत रहना चाहते हैं। इस कंडीशन में हमें अपने अजीब की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

हरदम कुछ पछूते रहने के बताव पर लगाम लगाने की जरूरत को रेखांकित करती हैं। समझना आवश्यक है कि उलझाऊ हालातों में, क्या चल रहा है? कैसा चल रहा है? कैसे हो? खुश क्यों नहीं दिखते हो? या टेंशनफ्री होने-रहने का प्रयास करो। जैसी सलाहों और सवालों का दोहराव हमारे दिमाग की मुश्किलों को और बढ़ा देता है। पहले से ही तकलीफ के घेरे में आए मन को और पीड़ा देने लगता है। उदाहरण के तौर पर जूझते युवा और सशक्त हो जाते हैं। अपने ही जीवन की दिशा को लेकर घबरेने वाली ये शंकाएं-आशंकाएं और भटकने वाली साबित होती हैं। साथ ही मन में आक्रोश भी उपजने लगता है, कभी खुद के प्रति तो कभी उन अपनों-परायों को लेकर, जो बिना मांगी सलाहें देते हैं। हर समय सवाल पूछते हैं। सही गाइडेंस की जरूरत बताते हुए पहले से ही उलझे-बिखरे दिलो-दिमाग को और भटकाते हैं। ऐसे दौर में किसी भी इंसान को थोड़ा समय देना सही रहता है। समस्याओं से जूझ रहा इंसान चाहता है कि कोई बेवजह सवाल ना पूछे। आते-जाते तसल्ली ना दे। बात-बात में कोई नसीहत कोई राय ना मिले। ऐसी बातें और बताव मददगार बनने के बजाय मनोभावों को और उलझाते हैं।

बताना चाहते। ऐसी परिस्थितियों में कोई गाइडलाइन देने के बजाय गंभीरता से उनकी मन-स्थिति को समझना एक अच्छा तरीका है। बेहतर महसूस करने के बाद वे स्वयं आपसे अपनी बात साझा करने की सोचेंगे। अगर नहीं तो यह उनका अधिकार है कि वे कितना और क्या दूसरों को बताना चाहते हैं? युवा पीढ़ी अपने निजी जीवन में दूसरों की ताक-झांक को ज्यादा पसंद नहीं करती। ऐसे में समझना आवश्यक है कि आपका संवाद



एकतरफा तो नहीं। आपके सवाल बहुत अधिक पर्सनल हुए तो अगले इंसान को असहज ही करोगे। साथ ही बिना मांगी सलाह भी दूसरे के लिए भार और तनाव का कारण बन सकती है।

समझें तनावग्रस्त व्यक्ति की मनोदशा

आज के दौर में अधिकांश लोग जो कुछ भी अपनों-परायों, परिचितों-अपरिचितों से साझा करना चाहते हैं, वह वर्चुअल दुनिया में मौजूद होता है। ऐसे में निजी समस्याओं को खुद तक रखकर अपनी प्राइवसी चाहने वालों को परेशान करना सही नहीं होता है। देखा जाए तो कई बार निजी संबंधों में दूरियां आने की बड़ी वजह जरूरत से अधिक ऐसी दखलंदाजी भी होती है। ठीक जस्टिन की तरह ही किसी को यह कहना कि 'मेरी तरह रहे, मेरे जैसे बने या इस हाल में यह करो, वह करो।' किसी भी व्यक्ति, खासकर युवाओं को नहीं भाता। ऐसा व्यवहार जीवन में दूरियां और मन में शिकायतें बढ़ाता है। खासकर जब यह पता ही ना हो कि अगला इंसान किन हालातों से जूझ रहा है। कुछ बातों पर गौर करते हुए उसकी मनोदशा को समझना का प्रयास करना उचित है। आपसे जुड़ा इंसान अगर आई कॉन्टैक्ट किए बिना बात करे, आते-जाते बचकर निकलने की सोचे, पछने पर कुछ भी स्पष्ट कहने से बचे या शब्दों को घुमा-फिराकर अपनी बात रखे तो समझ जाइए कि वह अपनी परिस्थिति और मन-स्थिति को बताने में सहज नहीं है। कुछ समय के लिए ऐसे लोगों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए। उनके दिलो-दिमाग को रिकवर होने का वक्त मिलना ही चाहिए। आगे सही समय देखकर उनके साथ संवाद की राह बनानी चाहिए। *



बजाय जांच-पड़ताल करते रहने का व्यवहार मन को ठेस पहुंचाता है। इसीलिए जान-पहचान वाले घर में किसी व्यक्ति की नौकरी छूट जाए। उम्मीद के मुताबिक परीक्षा का परिणाम ना आए। रिश्ते-नाते टूट जाएं या कोई हारी-बीमारी घर ले तो ऐसे में उनकी निजता का सम्मान करना जरूरी है। आमना-सामना होने पर असहज महसूस करवाने वाले प्रश्नों के बजाय संभलने का समय देना चाहिए। बहुत से लोग दूसरों से अपना सब कुछ नहीं



यह सही है कि तकनीक और आधुनिक महानगरीय जीवनशैली ने बेहतर सुविधाएं प्रदान की हैं। लेकिन इन पर आश्रित होकर हद से अधिक आलसी या निष्क्रिय बने रहना आपको शारीरिक, मानसिक रूप से बीमार बनाने के साथ ही सामाजिक रूप से एकाकी भी कर सकता है।

सही नहीं हद से अधिक निष्क्रियता

लाइफस्टाइल / चैतन्य

हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोर्टल डिलीवरी एजेंट का वीडियो वायरल हुआ। वीडियो में उसने बताया कि उसे दो मिनट की दूरी पर पार्सल पहुंचाने का ऑर्डर आया। इसके लिए डिलीवरी एजेंट ने हंसी-मजाक के सहज अंदाज में ग्राहक को आलसी कहा। स्वयं पोर्टल डिलीवरी एजेंट द्वारा बनाए गए वीडियो में वह बताता है कि ऑर्डर एक ही अपार्टमेंट के टॉवर सी से उठाकर टॉवर ई में देना था। यह दूरी इतनी कम थी कि पैदल चलकर सिर्फ दो मिनट में तय की जा सकती थी। यही वजह है कि डिलीवरी एजेंट मजाकिया लहजे में कहता है कि 'ये लोग इतने आलसी हैं कि सिर्फ एक बिल्डिंग से दूसरी बिल्डिंग में सामान पहुंचाने के लिए भी खुद नहीं चल सकते, इसके लिए भी पोर्टल बुक कर रहे हैं।' देखा जाए तो यह वाक्या हंसकर टाल देने भर का लगता है। गंभीरता से सोचा जाए तो हमारी बदलती जीवनशैली और दूसरों पर बढ़ती निर्भरता की कड़वी सच्चाई से रूबरू

निर्भरता की अति के नुकसान: व्यस्त जीवनशैली, तकनीकी विस्तार और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की बढ़ती पहुंच के चलते ऐसी बहुत सी सुविधाओं पर डिपेंडेंसी बढ़ी है। व्यस्तता के साथ-साथ एक पहलू यह भी है कि अपने-अपने कोजी कॉर्नर में बैठे लोग अब सब्जी तक लेने घर से बाहर नहीं जाना चाहते। क्लिक भर में ऑर्डर कर फ्री हो जाने का काम सुविधाजनक लगने लगा है। अफसोस कि यह स्थिति शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर तो नेगेटिव असर डालती ही है, सामाजिक फ्रंट पर भी इसके कई नुकसान हैं। फूड डिलीवरी एप्स के जरिए दस मिनट में कुछ भी मंगा लेने की सुविधा लोगों में हरदम कुछ ना कुछ खाते रहने की आदत भी डाल रही है। बहुत से लोगों को ऑनलाइन शॉपिंग की लत लग रही है। अनचाहा सामान भी ऑर्डर किया जा रहा है। देखा जाए तो यह स्थिति साइकोलॉजिकल निर्भरता बढ़ने से जुड़ा पहलू भी लिए है। जिसका मेंटल हेल्थ पर भी बुरा असर पड़ता है। धीरे-धीरे आलस के कारण हर तरह की रचनात्मकता और सक्रियता भी खत्म होने लगती है। चिंता, अवसाद और तनाव जैसी प्रॉब्लम जड़ें जमाने लगती हैं। सब कुछ घर बैठे ऑर्डर कर देने की आदत हो जाए तो सामाजिक गतिविधियों में भी भागीदारी कम होने लगती है। इसीलिए इस तरह की डिपेंडेंसी को सीमा तय करना आवश्यक है।



किसी बहाने बने रहें सक्रिय: कोई भी सुविधा जब आदत बनकर हद से ज्यादा निर्भर बनाने लगे तो चेतना चाहिए। जरूरत से ज्यादा निर्भर होना केवल सुविधा का लाभ लेना भर बल्कि अपनी क्षमताएं खो देने के हालात पैदा करता है। इसीलिए सक्रिय बने रहना जरूरी है। अपने काम-काज निपटाने के लिए एक्टिव रहना शारीरिक ही नहीं मानसिक और सामाजिक रूप से सक्रिय रहने से भी जुड़ा है। आस-पास के बाजार तक जाना या आस-पड़ोस के किसी घर में कोई सामान लेने या पहुंचाने जाना इंसानी जीवन का सहज हिस्सा रहा है। इन एक्टिविटीज से सामाजिक संबंध बनते हैं। एक्टिव रहने के बहाने तलाशिए। हर काम के लिए उपलब्ध सुविधाओं के इस दौर में खुद को निष्क्रियता से बचाने के लिए खास कोशिशें करने की दरकार है। *

कवर स्टोरी

डॉ. मोनिका शर्मा

बी दे दिनों मशहूर कैनेडियन सिंगर जस्टिन बीबर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर खुलासा किया कि वह टूट चुके हैं। गुस्से की समस्या से जूझ रहे हैं। जस्टिन ने अपनी मानसिक सेहत को लेकर भी चिंता जताई। दुनिया भर में मशहूर इस सिंगर ने अपनी पोस्ट में लिखा कि 'लोग मुझे ठीक होने के लिए कहते रहते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि अगर मैं खुद को ठीक कर सकता, तो मैं पहले ही कर चुका होता? मुझे पता है कि मैं टूट चुका हूँ। मुझे पता है कि मुझे गुस्से की समस्या है। मैंने अपनी पूरी जिंदगी उन लोगों की तरह बने की कोशिश की, जो मुझे कहते रहे कि मुझे उनके जैसा ठीक होना चाहिए। यही बात मुझे और ज्यादा थका देती है, ज्यादा गुस्सा दिलाती है।' अपनी एक दूसरी पोस्ट में जस्टिन यह भी कह चुके हैं कि 'मुझे यह पृष्ठना बंद करो कि मैं ठीक हूँ या नहीं। मुझे यह पृष्ठना भी बंद करो कि मैं कैसा हूँ? क्या कर रहा हूँ? मैं जानता हूँ कि हम सभी के लिए जीवन कठिन है। आइए हम अपने लोगों को प्रोत्साहित करें, न कि अपनी सुरक्षाओं को एक-दूसरे पर प्रोजेक्ट करें। हर बार आपकी चिंता देखभाल के रूप में सामने नहीं आती है। यह सिर्फ अजीब रूप से ऑप्रेसिव यानी चिंता और तकलीफ थोपने वाली भी हो सकती है।'

उचित नहीं ज्यादा सवाल-सलाह

असल में जस्टिन के विचार आम लोगों के लिए भी सार्थक सलाह लिए हैं। इस युवा और चर्चित चेहरे की बातें किसी अपने-पराए के जीवन में आई हेरान-परेषान करने वाली परिस्थितियों में

इमोशंस / अंतरा पटल

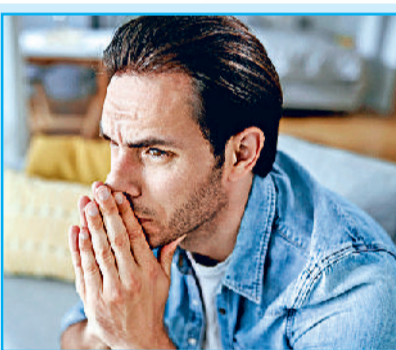
कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें आसानी से रोना नहीं आता है। उनके किसी रिलेटिव या करीबी की डेथ हो जाए तब भी नहीं रोते। जब उनका कोई अपमान हो जाए या उन्हें गहरा सदमा लगे या कोई गंभीर नुकसान हो जाए वे तब भी नहीं रोते। जिन अवसरों जैसे-अंतिम संस्कार, विदाई या भावनात्मक फिल्म देखते हुए, जब अधिकतर लोग रोते हैं, उन पर भी उनके आंसू नहीं छलकते। हालांकि उनकी आंखों में आंसू होते हैं, लेकिन वो आंखों से छलकते नहीं। तो क्या इससे यह साबित होता है वे भावनाशून्य इंसान होते हैं? शायद ऐसे ही कठोर या कर्तव्य के लिए पूरी दुनिया के सामने भी उठने-उठाने पर तैयार न हो सकने का प्रयास नहीं किया और न ही चेहरे पर दिखावटी मुस्कान लाने की कोई कोशिश की थी। कुछ लोगों को उनका ऐसे रोना, अजीब या कर्तव्य चलाता है। लेकिन वास्तव में देखा जाए तो अमांडा के रोने में सच्चाई

आमतौर पर आंसू बहाने को कमजोरी की निशानी और न रोने वाले को कठोर हृदयी मान लिया जाता है। लेकिन वास्तव में आंसू केवल मन की अमिष्यविति होते हैं, जो कई बार हमारे मन का उपचार भी करते हैं।

आंसुओं से बयां होती है मन की सच्ची हकीकत

विंबलडन फाइनल में हारने के बाद सबके सामने फूट-फूट कर रो पड़ी थीं। सैंकड़ों लोगों और कैमरों के जरिए पूरी दुनिया के सामने भी उठने-उठाने पर तैयार न हो सकने का प्रयास नहीं किया और न ही चेहरे पर दिखावटी मुस्कान लाने की कोई कोशिश की थी। कुछ लोगों को उनका ऐसे रोना, अजीब या कर्तव्य चलाता है। लेकिन वास्तव में देखा जाए तो अमांडा के रोने में सच्चाई

थी और बहादुरी भी। वास्तव में सबके सामने रोने वालों और न रोने वालों को लेकर समाज में अलग-अलग तरह की राय रखी जाती है। मानते हैं कमजोरी का लक्षण: आमतौर पर रोने को, कमजोरी या अत्यधिक भावुकता या नियंत्रण के खोने से जोड़ते हैं। विशेषकर पुरुषों के संदर्भ में कहा जाता है कि 'मर्द रोते नहीं हैं।' बचपन में जब कोई लड़का रोता है तो उससे कहा जाता है,



'लड़कियों की तरह रोना बंद करो।' रोने को लड़कियों का एक्सक्लूसिव गुण मान लिया गया है। ऐसे जुमले केवल लड़कों या पुरुषों को नीचा दिखाने के लिए ही नहीं बल्कि लड़कियों या स्त्रियों का भी अपमान है। घर और स्कूल में बच्चों की इस सोच के साथ परवरिश की जाती है कि संयम (या बर्दाश्त) का अर्थ ताकत है और आंसू बहाना, कमजोरी या अस्थिरता की निशानी है।

गम-खुशी में छलकते हैं आंसू: वास्तव में रोना हमारी सोच और धारणा से कहीं अधिक जटिल है। यकीनन दुःख (जो किसी के निधन पर होता है) रोने का सबसे आम कारण है। लेकिन लोग कुंठा, पीड़ा, असफलता या भयंकर अपमान के कारण भी रोते हैं। इसी के साथ खुशी के आंसुओं को कैसे अनदेखा किया जा सकता है? शतरंज का विश्व कप (महिला) जीतने के बाद दिव्या देशमुख खुशी से रो पड़ी थीं। हालांकि वह जब पिछली प्रतियोगिता में हार गई थीं, तब नहीं रोई थीं, लेकिन विजयी होने पर रोईं। अक्सर राहत, बड़ी सफलता, अत्यधिक खुशी भी दुःख जितना ही हमें भाव-विभोर कर देती है। बड़े-बड़े नेता, कलाकार, खिलाड़ी सार्वजनिक मंच पर रो पड़ते हैं। असम के बाद पीड़ितों का हाल सुनाते हुए हेम बरुआ संसद में रोए थे। अपनी फेयरवेल स्पीच देते हुए क्रिकेटर राहुल द्रविड रोए थे। आंसुओं ने इन लोगों को छोटा नहीं कर दिया। आंसुओं ने उन्हें अधिक संवेदनशील मनुष्य और भावनाओं से जुड़ा हुआ साबित किया।

मन का उपचार करे आंसू: रोना दवा की तरह भी काम करता है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि रोने से गम हल्का हो जाता है। चिकित्सा विज्ञान भी यही कहता है, भावनात्मक आंसुओं में स्ट्रेस हॉर्मोन होते हैं। रोने से तनाव कम हो जाता है, नर्वस सिस्टम को आराम मिलता है और राहत का अहसास होता है। इसलिए लोग कहते हैं, 'रोने के बाद हल्का महसूस हो रहा है।' जापान में तो रोने के लिए क्लब भी बने हैं, जहां लोग साथ रोने के लिए एकत्र होते हैं। इस प्रथा को 'रू-कत्सु' (आंसुओं की लालाश) कहते हैं। कहने का सार है कि हमें आंसुओं को कमजोरी की निशानी के तौर पर नहीं देखना चाहिए कि व्यक्ति ने अपने ऊपर का नियंत्रण खो दिया है। बल्कि यह समझना चाहिए कि आंसू व्यक्ति की सच्ची अभिव्यक्ति है। आज जब हम सब दिखावे के युग में जी रहे हैं, बनावटी सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर। ऐसे संसार में सच्चे आंसू ही इंसान की सच्ची अभिव्यक्ति है, जो साबित करते हैं कि हम इंसान हैं। *

गीत / कृष्ण बिहारी

क्या लिखोगे



देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?
सादगी से पूर्ण रचना एक भी तो जन नहीं पाए,
सय करूं तो आदमी भी इसलिए तुम बन नहीं पाए।
खोजकर अमृत पियोगे, क्या लिखोगे?
देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?
जो अर्धनिष्क एक घातक विष पिएगा वह रवेगा,
छटपटाई गौत मरकर जो जिएगा वह बवेगा।
तुम शहीदाना प्रियोगे, क्या लिखोगे?
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?
करे कागजों पर तुमने बस थिडिया उड़ाई है,
अबतलक समझे नहीं यह भी कि झूठी कमाई है।
रदियों जैसे बिकोगे, क्या लिखोगे?
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?

व्यंग्य

केदार शर्मा

वैश्विक स्तर पर भारत डेटा उपयोग में दुनिया का नंबर एक देश बना हुआ है, यह समाचार अखबार में पढ़कर गर्व से मस्तक ऊंचा हो गया। दरअसल डेटा, स्क्रीन पर चलने वाली समस्त गतिविधियों का ईंधन है। अगर डेटा न हो तो स्क्रीन की हालत धोबी के कुत्ते जैसी हो जाए, जो न घर का रहता, न घाट का। इस समय डेटा का थोक में उपयोग सबसे लोकप्रिय गतिविधि रील बनाने और देखने में भरपूर हो रहा है। धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म है, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है। सुबह बिस्तर से उठने से लेकर रात को सोने तक ये रील-रानी के संग ही उठते-बैठते हैं। कई बार तो हैरतअंगेज रीलों देखकर दांतों तले अंगुली दब जाती है। प्री-वेडिंग शूटिंग में वर-वधु के बकरा-बकरी की आवाज निकाल कर उनके पोज में एक-दूसरे को प्रपोज करने हुए, क्लास रूम में डांस करती शिक्षिका की, गधे पर उल्टा बैठकर वीडियो वाली टाइप, एक से बढ़कर

धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म है, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है।

रील की झील में डूबते लोग



एक अनगिनत रीलों इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और फेसबुक के आकाश में बरोक-टोक पतंगों की तरह मंडरा रही हैं। अभिव्यक्ति की बेलगाम, बेकाबू असीम और स्वच्छंद आजादी के एक साथ यहां दर्शन होते हैं। इनमें से ही कुछ लोग रील देखते-देखते रील बनाने में उस्ताद बन गए हैं। वे ही इनके प्रोड्यूसर हैं और वे ही कैमरामैन। खत

माया के दर्शन कराने और कमर लचकाने की। रीलों ने हर हाथ और हर आंख को काम धमा रखा है। अगर कोई रील खूब वायरल हो गई, तो कमाई भी बल्ले-बल्ले होती है। रीलों की इस दुनिया के आगे 'रीयल' दुनिया फीकी, नीरस और बेमजा लगने लगी है। संस्कारों की दुनिया में भले ही मंदी हो, पर रीलों के सितारों पर बुलंदी है। संस्कारों की थाली भले ही खाली हो, पर रीलों की थाली नित नए मसालेदार 'व्यंजनों' से मालामाल है।

यह कहना बहुत मुश्किल है कि रील को हम बना रहे हैं या रील हमें बना रही है। रील को हम चला रहे हैं या रील हमें चला रही है। एक बार बिना सेंसर की इस गाड़ी में बैठने के बाद दलान पर लुढ़काती हुई यह हमें कहाँ ले जाकर छोड़ेगी, भगवान ही मालिक है। कहीं हम रील युग में तो प्रवेश नहीं कर रहे हैं? कुछ भी हो बिना विवेक का इस्तेमाल किए इसमें सफर करने की लत लग गई तो गत का बिगड़ना सुनिश्चित है। रील की इस झील में जो एक बार डूबता है तो बस डूबता ही चला जाता है। रील देखने और बनाने की दीवानगी इस कदर हर उम्र और वर्ग के लोगों पर हावी है कि जैसे उन्हें अपने आस-पास किसी की सुध-बुध ही नहीं रहती, जैसे उनका पूरा अस्तित्व स्मार्टफोन के तल पर टिका गया है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

निर्बंध-उदात्त प्रेम कविताएं

तसलीमा नसरिन जो भी लिखती हैं, वो निर्बंध, भयमुक्त और विचारों का नया आयाम खोलने वाली हैं। हाल में छपकर आई उनकी प्रेम कविताओं के अनुवाद की किताब 'यदि प्यार करो' में भी उनकी लेखनी का वही तेवर देख सकते हैं। वे प्रेम को मन की गहनतम अनुभूति मानती हैं, और इन्हें अभिव्यक्त करने से परहेज नहीं करती हैं। 'जब मेरे साथ तुम नहीं होते, मेरे साथ तब तुम सबसे ज्यादा रहते हो।' और 'तुम्हें देखने पर/मन करता है, शुरू से/शुरुआत करूं जीवन की।' जैसी भावप्रवण पंक्तियों के साथ ही वे इसकी जटिलता को भी बयां करती हैं 'कौन कहता है प्रेम/क्रि चाहे और हो जाए'। *

पुस्तक: यदि प्यार करो, लेखिका: तसलीमा नसरिन, अनुवाद: कल्लोल चक्रवर्ती, मूल्य: 199 रुपये, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

अगर आपकी है

रचनात्मक लेखन में रुचि

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेक और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से। हमें दिल्ली में अपने फीचर विभाग के लिए आवश्यकता है-

वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक / हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर / प्रशिक्षु उप संपादक / भी आवेदन कर सकते हैं।

स्थापना अपना बायोडाटा मेल करें-

E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित



अगर आप घूमने-फिरने के शौकीन हैं, साथ ही रोमांचक और साहसिक गतिविधियों में भी आपकी रुचि है, तो वाइल्डरनेस टूर यानी रोमांचक-साहसी पर्यटन, आपके लिए परफेक्ट ट्रेवल-चॉइस हो सकती है। हाल के वर्षों में इसका ट्रेंड काफी बढ़ रहा है। इस ट्रेंड और इसके फायदों पर एक नजर।

एज्वॉयमेंट-थेरेपी का कॉम्बो एडवेंचर ट्रेवलिंग का बढ़ता क्रेज

ट्रेवल ट्रेंड / अंशु सिंह

पर्यटकों की बदलती पसंद को देखते हुए ट्रेवल इंडस्ट्री में नित नए बदलाव होते रहते हैं। अब लोग सिर्फ घूमने-फिरने के लिए यात्रा नहीं कर रहे, बल्कि उन यात्राओं पर जाना पसंद कर रहे हैं जिसमें रोमांच के साथ थोड़ी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि इन दिनों ट्रेवल थेरेपी के तौर पर वाइल्डरनेस टूर को लोग प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रेवल कंपनियों भी ऐसे ट्रेवलर्स की जरूरतों का ध्यान रखते हुए साहसिक टूर पैकेज डिजाइन कर रही हैं।

ट्रेवलिंग का नया तरीका: जरूरी नहीं कि हर किसी को पहाड़ों पर चढ़ना, बर्फ पर स्केटिंग करना या मानसून के दौरान घने जंगलों में ट्रेकिंग करना पसंद हो। लेकिन इन दिनों ऐसी साहसिक यात्राओं को लेकर लोगों की खास दिलचस्पी देखी जा रही है। टूर एंड ट्रेवल से जुड़ी कई कंपनियां भी इस तरह के वाइल्डरनेस टूर (साहसिक यात्रा) पैकेज उपलब्ध करा रही हैं। वाइल्डरनेस टूर के दौरान टूरिस्ट को कुछ दिन या हफ्ते भर के लिए उजाड़ और बंजर इलाके में अकेले छोड़ दिया जाता है। वहां से वे खुद ही रास्ता ढूँढते हैं और बाहर निकलते हैं। टूरिस्ट वाइल्डरनेस टूर के लिए अपनी पसंद से देश या स्थान का चयन करते हैं, जैसे- कोई जंगल, रेगिस्तान, पहाड़ या ध्रुवीय इलाका आदि। पूरी दुनिया में इन दिनों ऐसी यात्राएं हो रही हैं। इनमें मंगोलिया, पेरू और आर्कटिक महासागर में नौवें का द्वीप समूह स्वालबार्ड जैसे एडवेंचरस डेस्टिनेशन शामिल हैं।



कई डेस्टिनेशंस हैं मौजूद: हालांकि प्रतिकूल मौसम और दुर्गम स्थान संबंधी कारणों से आम पर्यटक इनसे बचते हैं। फिर भी एडवेंचर के शौकीन लोग इस तरह की साहसिक यात्राओं का लुप्त जरूर उठाते हैं। अपने देश में वाइल्डरनेस टूर के इच्छुक पर्यटकों के लिए अनेक ट्रेवल डेस्टिनेशंस मौजूद हैं। वे हिमालय की तलहटी में बसे दार्जिलिंग की पहाड़ियों में ट्रेकिंग ट्रिप और रॉक क्लाइंबिंग कर सकते हैं। हिमाचल की पहाड़ियों में माउंटेनियरिंग पर जा सकते हैं या फिर राजस्थान के दूर तक फैले रेगिस्तान में ऊंट की सवारी की यात्रा को रोमांचकारी बना सकते हैं। इसके अलावा, वन्यजीव यानी वाइल्डलाइफ को देखना भी भारतीय साहसिक पर्यटन का प्रमुख हिस्सा है। देश के राष्ट्रीय उद्यानों में सफारी और जीप टूर की सुविधा भी प्रदान की जाती है। वाइल्डरनेस टूर एंड ट्रेवल पैकेज में स्कीइंग, पैरालाइडिंग, कैम्पिंग और स्कूबा डाइविंग जैसी गतिविधियां भी शामिल होती हैं।



कंपनियां ग्राहकों की पसंद के अनुसार, वाइल्डरनेस टूर पैकेज डिजाइन करती हैं। जैसा डेस्टिनेशन होगा, उसी अनुसार यात्रा का खर्च आएगा। विदेश की यात्रा करने पर ये खर्च लाखों में हो सकता है। जैसे, एक मशहूर ट्रेवल कंपनी ने 'गेट लॉस्ट' नाम से एक पैकेज डिजाइन किया है। इसके तहत यात्री खुद को खोजने में खो जाते हैं। दरअसल, उन्हें किसी अनजान इलाके में छोड़ दिया जाता है, जहां से उन्हें खुद ही बाहर निकलना होता है। कुछ वेसे ही जैसे 'मैन वर्सेज वाइल्ड' टीवी शो में बेयर ग्रिल्स किया करते हैं। हां, वाइल्डरनेस टूर के दौरान कंपनियां जीपीएस और सैटेलाइट ट्रैकर से अपने यात्रियों पर नजर रखती हैं, ताकि किसी परेशानी में उनकी मदद कर सकें। *

वाइल्डरनेस टूर के फायदे

वाइल्डरनेस ट्रेवलिंग को आज एक हीलिंग थेरेपी की तरह देखा जा रहा है। इसमें यात्री जब अकेले कठिन रास्तों से गुजरते हुए अपनी मंजिल तक पहुंचते हैं, तो उनका आत्मविश्वास कई गुणा बढ़ जाता है। इससे वे जिंदगी में आने वाली चुनौतियों का बेहतर तरीके से सामना करना सीख लेते हैं। इसमें न केवल रोमांच होता है, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। तनाव कम होने से नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं। प्रकृति के साथ रहने से उससे रिश्ता गहरा होता है। इसमें दुनिया घूमने का मौका मिलता है। नई जगहों और संस्कृतियों को जानने से किशोरिता भी बढ़ती है।

बैंकिंग फ्रॉड से संबंधित घटनाएं आए दिन देखने-सुनने को मिलती रहती हैं। ऐसे में जरूरी है कि बैंक से संबंधित तमाम गतिविधियों के दौरान विशेष सावधानी बरती जाए। इसके लिए बैंक, एटीएम, यूपीआई और नेट बैंकिंग से संबंधित नियम जानना जरूरी है।

जरूर जानें एटीएम-यूपीआई नेट बैंकिंग से जुड़े रूल्स



अवेयरनेस
प्रणाली कठोर

इन दिनों बढ़ती आर्थिक धोखाधड़ी और बैंकिंग फ्रॉड के मद्देनजर प्रत्येक उपभोक्ता को एटीएम, यूपीआई, नेट बैंकिंग और बैंकिंग से संबंधित अन्य नियम जानने जरूरी हैं। ये नियम भारतीय रिजर्व बैंक और बैंकों की ग्राहक सुरक्षा नीति के तहत आते हैं। इन बैंकिंग नियमों की जानकारी के अभाव में आप इकोनॉमिक फ्रॉड के शिकार बन सकते हैं।

जानें आरबीआई के नियम: इस नियम के तहत किसी भी सरकारी या श्रेयुल्ड प्राइवेट बैंक में अगर आपके किसी खाते से कोई धोखाधड़ी हो जाती है तो आपका नुकसान पूरी तरह से बच सकता है बशर्ते इस धोखाधड़ी के तीन दिन के भीतर आप अपने बैंक को इस धोखाधड़ी की लिखित सूचना दें। अगर आप बैंक को अपने साथ हुई धोखाधड़ी की सूचना तीन दिन के भीतर न देकर चार से सात दिनों के भीतर देते हैं तो आपके सेविंग अकाउंट में 5000 से 25 हजार तक

किसी के साथ शेरार न करें। अगर कभी बैंक कर्मचारी भी इसकी मांग करता है, तो आपको उसे यह नहीं देना चाहिए, क्योंकि आरबीआई के नियम के तहत कोई बैंक कर्मचारी अपने बैंक के ग्राहकों से यूपीआई पिन नहीं मांग सकता। अगर आपको रिक्वेस्ट मनी या कलेक्ट रिक्वेस्ट जैसी कोई सूचना मिलती है तो उसे ध्यान से चेक करें, गलती से अप्रूव करने पर आपके अकाउंट से पैसा कट सकता है और बैंक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगा। पर हां, अगर आपने कोई यूपीआई ट्रांजेक्शन किया है और ट्रांजेक्शन फेल हो गया है, लेकिन आपका पैसा कट चुका है तो तुरंत शिकायत करें। सामान्यतया तीन दिनों में अपने आप ही कटा हुआ पैसा वापस आ जाएगा।



एटीएम का इस्तेमाल: यदि एटीएम से पैसा निकलते समय पैसा न निकले और बैलेंस कट जाए तो तुरंत संबंधित बैंक से इसकी शिकायत करें। पांच कामकाजी दिनों के भीतर आपका पैसा वापस आ जाएगा। जहां तक एटीएम ट्रांजेक्शन लिमिट का सवाल है तो मेट्रो शहरों में हर बैंक ग्राहक को तीन ट्रांजेक्शन प्रतिमाह मुफ्त है। अगर आप किसी गैर मेट्रो शहर में रहते हैं तो आपको

पांच बार किए गए ट्रांजेक्शन के लिए भी कोई फीस नहीं देनी पड़ती। लेकिन इससे ज्यादा बार की ट्रांजेक्शन पर बैंक की तय फीस देनी पड़ती है। अगर आपने एटीएम से ट्रांजेक्शन के दौरान तीन बार गलत पिन डाल दिया है तो 24 घंटे तक के लिए आपका खाता ब्लॉक हो जाएगा। 24 घंटे के बाद आप पुनः सही पिन डालकर एटीएम से ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

नेट बैंकिंग से संबंधित नियम: नेट बैंकिंग के लिए टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन अनिवार्य है जैसे ओटीपी और पासवर्ड। अगर लंबे समय तक आपका नेट बैंकिंग अकाउंट एक्टिव नहीं रहता है तो आपके अकाउंट से ऑटो लॉग आउट हो जाएगा। हर तीन से छह महीने के भीतर आपको अपने नेट बैंकिंग अकाउंट का पासवर्ड चेंज कर लेना चाहिए। कभी भी ईमेली गैस या ब्रेक किए जा सकने वाले पासवर्ड न बनाएं।

बैंकों की जिम्मेदारी: धोखाधड़ी से संबंधित किसी भी रिपोर्ट को बैंक को दस कार्य दिवस में हल करना होता है यानी आप जो शिकायत करते हैं, उसकी जांच उन्हें दस दिन के भीतर करनी होती है। अगर बैंक दस दिनों तक आपकी रिपोर्ट में जांच पूरी नहीं करती, तो कानून के हिसाब से वह आपके अकाउंट से हुई धोखाधड़ी की रकम पर ब्याज भी देगा। साथ ही बैंक आपके पैसे की सुरक्षा के लिए ओटीपी, एसएमएस अलर्ट, लिमिटेड सेंटिंग, कार्ड ऑन/ऑफ फीचर देने के लिए भी बाध्य है। हर बैंक अपने ग्राहक को साइबर क्राइम की रिपोर्ट कराने के लिए 1930 नंबर पर

तत्काल कॉल करने की सुविधा देती है ताकि धोखाधड़ी को तुरंत रोका जाए। इसके अलावा www.cybercrime.gov.in इस आधिकारिक ऑनलाइन पोर्टल पर आप ऑनलाइन रिपोर्ट कर सकते हैं। बैंक आपके दावे को सही माने, इसलिए एफआईआर या ऑनलाइन शिकायत का रसीद, कर्मचारी नंबर अपने पास रखना जरूरी है। *

मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए

टूढ़ इच्छा शक्ति, मेहनत और लगन के बल पर जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है। जीवन में सफलता पाने के कुछ गोल्डन रूल्स हैं, जिन्हें फॉलो करके मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य को साधा जा सकता है।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

महान संत स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को हमेशा निडर, कर्मठ और सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा दी। स्वामी जी कहा करते थे, 'जो भी करो पूरी लगन और एकाग्रता से करो। खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।' युवाओं को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए दुनिया भर के विद्वानों और मोटिवेशनल स्पीकर्स ने समय-समय पर बड़ी कारगर, महत्वपूर्ण और उपयोगी बातें कही हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

जरूरी है सेल्फ कॉन्फिडेंस: अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो खुद को दायरे में बांधना बंद करें और पूर्वाग्रह से मुक्त रहने की कोशिश करें। ऐसा कभी ना सोचें कि जो कभी आपके किसी मित्र या परिवार के किसी सदस्य ने नहीं किया वह आप भी नहीं कर सकेंगे। आपको अपनी क्षमताओं और कमियों को पहचानना होगा और खुद को इस योग्य बनाना होगा कि आप जो चाहे कर सकें।



न समझें खुद को कमजोर: डर हमें जीवन में कुछ नया नहीं करने देता। नई स्किल सीखने, चुनौतियां स्वीकार करने, नया प्रोफेशन या बिजनेस करने में असफल होने का जोखिम होता है। लेकिन इस जोखिम या असफलता के डर से कोशिश नहीं करना बिल्कुल भी सही नहीं है। जो खुद को कमजोर समझते हैं या डरते रहते हैं, वे जीवन में कुछ भी नया या बड़ा हासिल नहीं कर पाते हैं।

पुस्तक 'करेज एंड कॉन्फिडेंस एन एंथोलॉजी' के लेखक नॉर्मन विसेंट पील ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'डर लोगों को शारीरिक रूप से कमजोर बना देता है। किसी न किसी रूप में डर लोगों को वह हासिल करने से रोक देता है, जो वे जीवन में वाकई हासिल करना चाहते हैं।'

एकाग्र होकर काम करें: एक समय में एक काम करें और ऐसा करते समय अपनी पूरी ऊर्जा और ताकत उसमें डाल दें और बाकी सब कुछ भूल जाएं। आज के डिजिटल युग में विभिन्न माध्यमों से सूचनाओं और जानकारीयों की बाढ़ ने हमारे मस्तिष्क को एकाग्रता को छीन लिया है। चाहे पढ़ाई-लिखाई करनी हो या वर्क प्लेस पर अपना हिसाब-किताब लिखना हो, अपने ग्राहक से डील करनी हो या फिर कोई प्रोडक्ट बनाना हो। आप कोई भी काम तभी ठीक से कर सकते हैं, जब आप उसे पूरी तरह एकाग्रचित होकर करें।

पुस्तक 'हाइपर फोकस' के लेखक क्रिस बेली लिखते हैं, 'अगर आपको अपने चंचल चित्त को स्थिर करना है तो सबसे पहले फालतू चीजों पर अनफोकस करें।' वे कहते हैं कि आज हम बिना ध्यान बंटए कंप्यूटर पर सिर्फ 40 सेकेंड ही लगातार काम कर पाते हैं। इस

समय को बढ़ाकर ही हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकेंगे। उन्होंने लिखा है, 'हाइपर फोकसिंग से ही हम अपना सबसे बेहतरीन संस्करण बन सकते हैं।'

समस्याओं को धैर्यपूर्वक हल करें: किसी समस्या के सामने आते ही अगर आप घबरा जाते हैं या हड़बड़ा जाते हैं तो जल्दबाजी में न सही उपाय सोच पाते हैं, न ही उसका हल निकाल पाते हैं। यहाँ तक कि आप अपने सच्चे और विश्वसनीय मददगार का नाम भी याद नहीं कर पाते। इस स्थिति में समस्या के एक ही हिस्से पर आपका नियंत्रण होता है और वह है आपकी प्रतिक्रिया। समस्याएं हमारे भीतर के सर्वश्रेष्ठ गुणों को बाहर निकालती हैं, क्योंकि मुसीबत में ही हम अपनी क्षमताओं के बारे में ठीक से सोच पाते हैं। पुस्तक 'थिंकिंग फास्ट एंड स्लो' के लेखक डेनियल कानमैन कहते हैं, 'जब आप चिंतित होने की बजाय किसी समस्या को रचनात्मक तरीके से हल करने की कोशिश करेंगे तो ज्यादा प्रभावशाली



बनेंगे। परिणामस्वरूप आप खुद को पहले से ज्यादा बड़ी समस्याएं हल करने के लायक बना लेंगे।'

अनुशासन का पालन करें: स्वतंत्रता और मनचाहा करने की छूट लेना हमारे स्वभाव में होता है। लेकिन यह विवेकपूर्ण, संयमित और अनुशासन युक्त होनी चाहिए। यह आप पर निर्भर करता है कि आप सीमा में रहकर अपनी क्षमता से जीवन को उत्कृष्ट बनाएं या उसकी उपेक्षा करके अपने लिए दुख आमंत्रित करें। स्वच्छता वास्तव में स्वतंत्रता नहीं है। इसका परिणाम अन्ततः विनाश ही है। इस संदर्भ में बेस्ट सेलर पुस्तक 'द नाउ हैबिट' के लेखक नील फियोरे ने कहा है, 'दिमाग वही कारण चाहता है जो उसे पसंद है। लेकिन जो व्यक्ति जीवन में अपने दिमाग की पसंद और सुविधा से चलता है वह कभी कुछ हासिल नहीं कर पाता।' इसलिए जरूरी कामों को टालने की बजाय प्राथमिकता से करना जरूरी है। *

आज से पितृ पक्ष आरंभ हो रहे हैं। पुराणों में इस दौरान अपने पूर्वजों को श्राद्ध एवं तर्पण के द्वारा तृप्त करने का विधान दिया गया है। इससे न केवल जीवन में शांति-समृद्धि आती है, पुरखों का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

पुरखों से पाएं सुख-शांति समृद्धि का आशीर्वाद



किए गए तर्पण एवं श्राद्ध को स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति पूरी श्रद्धा से श्राद्ध करता है, उसे पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे विवरण शांति में मिलता है।

तर्पण: प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर जल में काला तिल, जी एवं कुश मिलाकर तर्पण करना चाहिए। यह पितरों को जल अर्पित करने का एक उपाय है, जिससे उनकी प्यास बुझती है।

श्राद्ध की विधि: पितरों की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म करना चाहिए। श्राद्ध के दिन किसी योग्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर भोजन कराएं। भोजन में खीर, पूड़ी तथा पितरों की पसंद के सात्विक भोज्य पदार्थ शामिल करें।

पिंडदान: आटा, जौ, चावल एवं

निकटतम किसी भी पवित्र धार्मिक-स्थल, नदी, तालाब, कुंड, सागर कहीं भी किया जा सकता है।

दान-पुण्य: श्राद्ध-पक्ष में दान का मिलाकर तर्पण करना चाहिए। दान करने से न केवल पितृ प्रसन्न होते हैं, बल्कि जीवन की परेशानियां भी दूर होती हैं। पितृ-पक्ष में दान के योग्य मानी जाने वाली निम्न वस्तुएं उचित मानी जाती हैं। इसमें आप अन्न, फल, चांदी का दान कर सकते हैं। श्राद्ध कर्म के दौरान भोजन का कुछ हिस्सा गाय, कौवे, कुत्ते एवं चिंटियों को भी खिलाना चाहिए।

ये भी है जरूरी: पितृ-पक्ष के 15 दिनों तक सात्विक जीवन का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। पितृ-पक्ष के प्रहृद दिन परिवार में लहसुन, प्याज एवं मांसाहार का सेवन पूरी तरह से वर्जित होता है। इन दिनों ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा अपने घर एवं मन दोनों को पवित्र रखें। प्रतिदिन शाम के समय घर की दक्षिण दिशा में सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए। पीपल के पेड़ में दूध, काला तिल एवं जल चढ़ाएं। पीपल के तेल को पितरों का वास माना जाता है। पितृ स्त्रोत का पाठ करना भी पुण्यकारी होता है। *

उसके जीवन में सुख, समृद्धि, आयु, यश, धन आदि की प्राप्ति होती है। मार्कंडेय पुराण में कहा गया है कि 'श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ-गण श्राद्धकर्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, सुख, राज्य, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं।' महर्षि सुमंतु के अनुसार, 'इस संसार में पितरों से बढ़कर कोई दूसरा कल्याणप्रद कर्म नहीं है।'

ऐसे होते हैं पितृ प्रसन्न: पितरों को प्रसन्न रखने एवं उनका आशीर्वाद पाने के लिए पितृ-पक्ष में नियमानुसार कुछ विशेष कार्य तथा अनुष्ठान किए जाते हैं, जिनका

